

समस्तीपुर से गाड़ी चलि पड़ल। अगिला स्टेशन अंगारघाट। दू मिनट गाड़ी अटकल। ओहि दू मिनटक अवधिमे स्टेशनपर मुखरित होबज्वाला अनेक प्रकारक ध्वनि कानसँ टकराइत रहल—पान-बीड़ी सिकरेट, राम-दना...रा...म दना, काबुली चना हय...अपनो खाउ, बौआ ले' लेने जाउ, एक अने बोरा दू अने जोड़ा... एहि ध्वनि तरंगक बीच एक टा एहना ध्वनि कानमे पड़ल जे अपना दिस चुम्बक जकाँ धीचि लेलक... 'बाबू! जाड़ा फेनो अओतो'।

एक आन्हर दहिना हाथे लाठी आ बामा हाथे गाड़ीक डिब्बाकेँ स्पर्श करैत आगाँ बढ़ल चल अवैत छल। ओकरा मुँहसँ आन-आन आन्हर जकाँ—अन्हराकेँ एगो पाइ दू बाबू, सिताराम... सिताराम अन्हरा नचारकेँ एक पाइ भेटओ मालिक! आदि ध्वनि नहि भऽ रहल छलैक। ओ अनवरत एक मात्र शब्द वर्जित आगाँ ससरल जा रहल छल—'बाबू! जाड़ा फेनो अओतो'। हम जाहि डिब्बामे छलहुँ ताहि ठाम धरि जावत ओ आन्हर आयल तावत गाई साहेबक ह्वीसिल बाजि चुकल छलनि, गाड़ी ससरल लागल। हमरा मोनक जिज्ञासा मोने रहि गेल। केवल आकृति देखवामे आयल। नाक, कपार आदि देखला उत्तर बुझना गेल जेना ई स्वरूप पहिने देखल हो आ से अत्यन्त निकटसँ आ अनेक बेर। कतबो स्मरण करैत गेलहुँ, माथपर कतेक बल देल, स्मृतिकेँ कतबो जगाओल, किन्तु मोन नहि पड़ल। भेल जे भऽ सकैत अछि भीखे मडैत कतहुँ देखने होइएक, परन्तु भीख मडैत जे देखने रहितिएक तँ ओकरा मुँहसँ उच्चरित होबज्वाला शब्द जे आइ एना आकृष्ट कयलक से नहि करैत। एतबा सोचैत सोचैत फेर मोनमे ओ शब्द विचार-तन्त्रमे ओझराय लागल।

'बाबू! जाड़ा फेनो अओतो' कोन विशिष्ट अर्थकेँ ई शब्द अपनामे अन्तर्निहित रखने अछि? संसारमे बहुत भिखारिकेँ देखल अछि। आन्हर भिखारि तँ बेसी एहने देखवामे आयल जे अपन बिलक्षण स्वरमे संसारक निस्सारताकेँ सिद्ध करज्वाला पद, भगवद्भक्तिसँ ओत-प्रोत सूर-तुलसी-मीरा-कवीरक पद सभकेँ गाबि-गाबि भिक्षा नहि, अपितु अपन

संगीत कलाक मूल्य मडैत हो, अपन पारिश्रमिकक याचना करैत हो। साधारणतः आन्हरक स्वरमे झंकारो अपूर्व रहैत छैक। कतेकक कहब तँ ईहो छैक जे सूरदास सभकेँ प्रकृतिक दिससँ स्वर वरदान रूपमे प्राप्त भेल रहैत छैक।

किन्तु एहि आन्हरक स्वरमे हमरा कोनो आकर्षण नहि बुझवामे आयल। आकर्षण छलैक ओकर शब्दमे। एहि शब्दमे, एतेक पैघ जीवन-दर्शनक शब्दमे भीख मडैत आइ धरि दोसर भिखारि नहि भेटल छल। जतेक काल धरि गाड़ीपर चढ़ल रहलहुँ, रहि-रहि एहि शब्दक रहस्यकेँ उद्घाटित करवाक दिशामे बुद्धि ओझरायल रहल।

एक लोकोक्ति मोन पड़ल—'एके माघे जाड़ नहि जाइत छैक' अर्थात् मनुष्यकेँ एके वस्तुक प्रयोजन अनेक बेर पड़ैत छैक। ने जानि, समाजमे रहलाक कारणेँ कवन ककर कोन प्रयोजन पड़ि जाइत छैक तकर ठेकान नहि। प्रायः जकरा आगाँ ई आन्हर हाथ पसारैत अछि तकरा ई अहंभाव नहि भऽ जाइक जे ई मड-निहार दीन अछि आ हम पैघ छी। तँ एहि शब्द द्वारा ओ इंगित करैत रहैत छैक। अपना मोने एहि प्रकारेँ ओहि शब्दक व्याख्या करैत मानसिक विचारक तारतम्यकेँ स्थगित कयलहुँ आ सोचलहुँ जे घुरतीमे ओहि आन्हरसँ भरि इच्छा गप्प करब।

घुरतीमे संयोगसँ ततेक राति कऽ कऽ ओहि स्टेशनपर अयलहुँ जखन भिखारिक कोन कथा पानो-बीड़ी-वलाक कोनो शब्द कर्णगोचर नहि भेल। ई शब्द रहि-रहि कऽ स्मृति-पटलपर आवि विचार-तन्त्रपर कवनहुँ कऽ ओझरा जाइत छल।

दोसर बेर ओहि बाटेँ यात्रा करवाक पुनः संयोग लागल। एहि बेर पहिनेसँ ठेकाने छलहुँ जे ओहि आन्हरसँ अरबद्वि कऽ गप्प करबे करब। अंगारघाट स्टेशनमे गाड़ी

प्रवेश कयलक तँ हम खिड़कीसँ मूड़ी बाहर कऽ लेलहुँ। आँखि द्रुतगतिसेँ सौसे प्लेटफार्मपर दौड़ि गेल। कान अकानि कऽ ओ शब्द सुनवाक हेतु सतर्क भऽ गेल मुदा आहि रे कुसंयोग! ने आँखिमेँ कतहुँ ओ स्वरूप देखि पड़लैक ने कान पुनः ओ शब्द सुनि सकल। थोड़ेक निराशा भेल आ मोनमे भेल जे मरि-हरि गेल होयत। पुनः ओ शब्द मोनमे अनुगुंजित होबऽ लागल—'बाबू, जाड़ा फेनो अओतो'।

चिन्तनक चर्खा जखन चलऽ लगैत छैक तखन मोट-पातर स्थूल सूक्ष्म अनेक प्रकारक विचारक सूत बाहर होबऽ लगिते छैक। से मोनमे एहिना विचार सभ आवऽ लागल—अवश्य ओ आन्हर परिस्थितिविशेष-वश भीख मड-वाक हेतु बाध्य भेल होयत अन्यथा एहि रूपेँ व्यंजनामे बाजि भीख मड-वाक विशेषता ओकरामे कतसँ अवितैक? ई सभ गुनिधुनि करिते छलहुँ तावत गाड़ी खगड़िया स्टेशनपर आवि कऽ ठाढ़ भेल आ तुरन्त कानमे ओ शब्द पहुँचल—'बाबू! जाड़ा फेनो अओतो'।

हम विस्फारित नेत्रेँ प्लेटफार्म-पर ओहि आकृतिमेँ हेरऽ लगलहुँ। ओ ओहिना एक हाथे लाठी टेकने दोसर हाथे गाड़ीक डिब्बा सभकेँ हँसोयैत आगाँ बढ़ैत-बढ़ैत हमरा डिब्बा लग पहुँचल। हम कहलियेक—सूरदास! ऊपर आवह, तोरासँ बहुत रास गप्प करवाक अछि।

'हमरासँ गप्प? आ से बहुत रास?? बाबू! अपने केँ छिकौ, हमरा नचारसँ अहाँकेँ कोन गप्प होयत? हमरा तऽ अइ दुनियाँ-दराजमे कोइ ने ऐछ। आव तऽ बीस बरिस भऽ गेल एनाहिसे भीख मडैत। केनाहूँ अइ चोलाकेँ बदल-वाक दिन देखि रहलीयऽ, हमरासँ कोन गप्प करब सरकार? जाले अहाँसँ गप्प करब ताले दू-चारि कोठली लड. घमब तँ कोनो दाता किनसियाइत मिलि जाइथ।

सूरदास अति विनीत भावेँ कहि गेल आ बुझना जाय जे ओकर अन्ध आँखि भीतरसँ जेना देखवाक प्रयत्नमे लागल होइक। आँखि बैसल नहि छलैक, ने फुल्ला माड़ा अथवा गोजड किछु छलैक, अपितु सम्पूर्ण आँखि दुरुस्त छलैक, केवल दुनू आँखिक करिया डिम्हा सीपकेँ बटुम जकाँ उज्जर सेवत।

हम कहलियेक—सूरदास! आइ दू बरखसँ हम तोरा तँकैत छलियह। तेसर बरख तोरा अंगार-घाट स्टेशनपर देखने रहियह, ओही ठाम इच्छा भेल जे तोरासँ गप्प करी, मुदा गाड़ी ततनी काल ठाढ़ भेलैक जे जावत तो हमरा डिब्बा लग पहुँचलह तावत गाड़ी फुजि गेलैक। घुरतीमे ततेक राति कऽ गाड़ी अयलैक जे स्टेशनपर क्यो नहि छलैक। परकाँ साल हम एम्हर अयबे ने कयलहुँ। एहि बेर अंगारघाटमे फेर तोरा तकलियह तँ नहि देखि पड़लह। हम निराश भऽ गेलहुँ जे आव तोरासँ भेट नहि भेल। मोनक बात मोनेमे औनाइत रहि गेल। यैह गुनिधुनि मोनमे होइत छल कि तोहर आवाज सुनलियह। आवह, ऊपर आवह, कनेक अपन परिचय दैह। तखन जे बात पुछैत छियह तकर जवाब दिहह।

एहि बेर सूरदास गाड़ीमे उत्सुकतापूर्वक आवि गेल। हाथ पकड़ि कऽ कहलियेक—बैसह एहि ठाम। मुदा ओ सीटपर किन्नहुँ ने बैसल। कहलक—विनु टिकसेँ अइपर बैठव पाप छिये' बाबू! आ हम तइ जोकर नई छी जे ओ ठिन बैठी। एतबा कहैत ओ दुनू बेंचक बीचमे नीचाँमे बैसि गेल। बैसैत त पुछलक—बाबू! अपनेक घर कहाँ ऐछ?

हम कहलियेक—पहिने तो हमरा प्रश्नक उत्तर दैह, तखन हम तोरा प्रश्नक उत्तर देवह। पहिने ई कहह जे तोहर घर कतऽ छह?

'जहँ धंड तहँ घर।' हमरा घर-दुआरिसँ कोन मतलब। आव अइ-दऽर दुनियाँमे हमरा के ऐछ

बाबू, हम भगवानक नाओ भजाकऽ
नै खाय चाहै छी । जे सीताराम—
सीताराम करैत रहैयऽ तेकरासभकेँ
धेयान देउआपर रहै छै । ऊ देउएकेँ
सीताराम बुझै छै । बाबू, रामक नाओ
कण्ठसँ नै, हिरदयसँ लेबाक चीज छै ।

जेकरा ले' घर दुआरि राखब ।
पहिने अंगारघाट टीसनपर भीख
मड' छलौ, ओइ दिन भिखमंगा
कम छलै' महज रातिमे ओइ ठिन
अराम करऽके वास्ते बड़ा तकलीफ
होइ छल । खगड़ियामे बड़ भिखमंगा,
अइ ठिन कोइ जल्दी भीखे नै दै' छै'
महज अइ ठिन मोसाफिरखानामे
अराम करै'मे कोनो खास तकलीफ
नई होइ छै' तँ साल भरिसँ एही ठिन
रहै' छिए' ।

हम पुछलिकै—सूरदास !
आन-आन आन्हरकेँ सुनै' छिए'
सीताराम सीताराम कहि कऽ भीख
मड'त रहैत छैक । तोरा मुहँ
भगवानक नाम नहि सुनैत छियह ।
से किएक ?

'बाबू ! हम भगवानक नाओकेँ
भजा कऽ नै खाय चाहै' छी । जे
सीताराम सीताराम कहैत रहैयऽ
तेकरासभकेँ धेयान देउआपर रहै' छै'
ऊ देउएकेँ सीताराम बुझै' छै' ।
बाबू ! भगवानक नाम कण्ठसँ नै,
हिरदयसँ लेबाक चीज छै । पापीकेँ
हिरदयसँ भगवानक नाम बहराइते
नै छै' । असगरमे बैठल रहै' छी,
पड़ल रहै' छी तँ कोसिस करै' छी
जे हिरदयसँ भगवानक नाम ली,
महज ई पापी मनुआँ दुनिये'मे
बौआइत रहैअय ।

हम फेर पुछलिकै—सूरदास !
कहैत छह जे क्यो नै अछि, तखन
मन कतऽ बौआइत छह ? तो' अपना
जीवनक प्रसंग किछु कहबह । बड़
उत्सुकता अछि ।

ओ किछु काल अतीतमे डूबि
गेल । ओकर ओहि श्वेत आँखिमे
नोर डबडवा कऽ भरि गेलैक ।
बाजल—बाबू ! आइ धरि ई बात
कोइ नै पुछलक । हम अहूँ अपन
दुखड़ा कहि नहि दुखावऽ चाहै' छी ।
की करब हमर दुखड़ा सुनिकऽ ?

हम कहलिकै—सूरदास ! तो'
जे कहैत छहक—'बाबू ! जाड़ा
फेनो अओतो' एहिमे हमरा बहुत
अर्थ नुकायल भेटैत अछि । हमरा
होइत अछि जे कोनो कुसंयोगसँ तोहर
आँखि खराब भऽ गेलह ।

बुझना गेल जे ओकरा अन्तरक
वेदना बान्ह तोड़ि कऽ बाहर भऽ
गेलैक । मोतीक माला जकाँ नोरक
बुन्द गालपर दऽ झहरऽ लगलैक ।
बाजल—बाबू ! आव हमर राम-
कहानी सुनिये लू ।

'हमरा बाप एक दिन तीन-चारि
चटकन मारलक । अपना गिरहतक
ओइ ठिन हम भँसी चरबै' छलिकै ।
एक दिन ओरहरवामे भँसीक पीठेपर
निन्न भऽ गेल । से एक गोड़ाक
बाड़ीमे पँसिकऽ भँस सभ टा भाँटा
खा गेलै । बाड़ीवला भँसकेँ ढाँठमे
दऽ देलक' । एही अपराधमे बाबू
हमरा मारलक । हम भागिकऽ
समस्तीपुर चल एलिकै । ओ ठिन
एक टा गाडीमे बैठलिकै से ओ गाडी
दरभंगा नेने चल गेल । ओइ ठिन
टी.टी. पकड़लक, महज हमरा लड' तँ
किच्छो नै छल । नंगा झाड़ कऽ
देख लेलक आ दू-चारि चटकन
मारि कऽ बैला देलक । टीसनसँ
सोझे उत्तर मुहँ विदा भेलिकै
लेन धेने । देखलिकै जे मौगी आउर,
छौड़ी आउर लेनपर जरलाहा कोइला
बीछै छै । बाबू ! हमहूँ कोइले
बीछऽ लगली । फाटल एक गो गमछी
छल । ओहीमे जमा बैलिकै । पनरह
सोलह बरिसके उमेर रहय । एक गो
छौड़ी कोइला बीछैत रहै' ऊहे
हमरो अपना जरे बजार नेने गेल ।
बजारमे कोइला बेचबा देलक ।
पुरता ढौआ चलै' छलै' । साढ़े तीन
आना पाइ भेल । दू गो पाइ ओइ
छौड़ीकेँ दऽ देलिकै ।

कनेक काल सूरदास चुप भऽ
गेल । जेना पुनः कोनो अतीतमे डूबि
गेल हो । एक दीर्घ निसास जेलक

आ कहब आरम्भ कयलक—एनाहिते
पाँच-छौ दिन बीत गेल । सतुआ-
उतुआ लऽ के खाइ छली आ कोनो
दोकानक बहरीमे पड़ि रहैत छली ।
पाँच-छौ दिनके बाद दू तीन दिन
ऊ छौड़ी नै आयल तँ मोन केनादन
करे लागल । एक गो बुढ़ियाकेँ
पुछलिकै । पहिने तँ लाज होअय,
महज तेसरा दिन नहि रहल भेल तँ
पूछि देलिकै । ऊ बुढ़िया कहलक
जे परबतियाकेँ बोखार लागल छै' ।
ओइ दिन बाबू ! ओही बुढ़ियाक
जऽरे परबतियाक ओइ ठिन गेली ।
बोखार उतरि गेल रहै' । सबुरदानाकेँ
पंथ पड़तै' महज ओकर बुढ़िया माय
सिरहन्नामे बैठल रहै' । हम धखाइते
अइ नामे गेलिकै तँ परबतिया उठिकऽ
बैठि गेलै' । बुढ़िया पुछलक—
कोन आसरम छऽ ? कहलिकै दुसाध ।
दुसाध ? बाबू ! ऊहो दुसाधे रहै' ।
ओकरा लड़िका नई रहै' । बाप
रेलबीमे डरेबर रहै' । हमहूँ दुसाधे छी
से सुनिकऽ जेना बुढ़ियाकेँ छाती सूप
सन भऽ गेलै' । परबतियाकेँ हालचाल
पुछलिकै तँ कहलक जे बोखार उतरि
गेलै' । बाप अबै' छै' तँ बजारसँ
सबुरदाना आनि दैतै' । आइ पंथ
दऽ देबै' ।

'बाबू ! हम सोझे उठलिकै आ
अपने लगक ढौआसँ एक आनाकेँ
सबुरदाना दौड़ले कीन कऽ आनि
देलिकै' । जा ले पंथ बनलै' आ
छौड़ी खाइत रहै' ता ले ओकर बापो
आबि गेलै' । ओइ दिनसँ ऊ बुढ़वा
हमरा अप्पन लड़िके जकाँ मानऽ
लागल । ओकरे ओइ ठिन रहऽ
लगली । अप्पन बाप बिसैर गेल ।
माय पहिने मरि गेल छल ।

किछु क्षण चुप भऽ सूरदास
दू बेर सेप घोटलक । हमरा आव
चिन्हवामे भाड ठनहि रहल । सूरदास
फेर कहब आरम्भ कयलक—बाबू !
बादमे चलि क ओइ पारवती
महादेव हमरे बना देलक बुढ़वा ।

अपना पिलसिन भेट गेलै' तँ अपना
ओजीमे रेलबी के नोकरी धरा देलक ।
भगवान पारवतीके कोइखमे कातिक
गनपति दू गो चेडना सेहो देलखिन ।
बड़ सानसँ जिनगी चलै' छल बाबू !
बादमे हम टेन के डरेबर छली ।

वेदनाक एक तरंग सूरदासक
आँखिके जोरसँ आप्लावित कऽ देल-
कैक । दू मिनट धरि जेना ओहि
वेदनाकेँ पीबि जयबाक चेष्टामे रहल ।
देहपरक अइ पोछासँ आँखि पोछलक,
नाकेँ झाड़लक आ साहस बटोरि कऽ
कहऽ लागल—महज अपने हाथे
हम अपना दुनू लड़िकाके बलिदान
कऽ देली . . . ।

हम कहलिकै—तोहर नाम
रामफल थिकह ? रजुआ, भजुआ
तोरे बेटा छलह ? डेढ़बज्जी गाडीमे
सिगनल लग जाहि ट्रेनकेँ तोही
हँकैत आबि रहल छलह ताहि ट्रेनसँ
दुनू भाँइ कटि गेलह ?

सूरदास हँसोथि कऽ दुनू पयर
पकड़ि लेलक आ बाजल—बाबू !
अहाँ बूढ़ा गुरुजी के लड़िका छी ?

हम पुछलिकै—से सौ कोना
बुझलह ?

बाबू ! हम बोली अकानैत
छलीयऽ । सूरदासक अन्तरमे जेना
वेदनाक स्थानपर ममता उमड़ि
आयल होइक ।

हम कहलिकै—हँ, कटहरबाड़ी-
क प्राइमरी स्कूलमे हमहूँ दुनू भाँइ
रजुआ भजुआक संगे पढ़ैत रही ।

बाबू ! अहाँ बतहू बाबू छी कि
जीबू बाबू ?

उत्तर देलिकै—हम बतहू छी,
जीबूक तँ ओकरे अगिला साल देहान्त
भऽ गेलैक ।

सूरदास, नहि, नहि, रामफल,
उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल । हमर सौसे
देह हाथसँ हँसोथि लेलक । बुझना
गेल जेना हमर शरीर स्पर्शसँ ओकरा
एक प्रकारक सान्त्वना भेटल होइक ।

या देवी सर्व भूतेषु भ्रान्ति रूपेण संस्थिता

—श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'—

विजयादशमीक पर्व आथल, प्रत्येक धर्मप्राण परिवारमे देवी दुर्गाक पूजा आराधना सम्पन्न भऽ गेल । अनेक कोटि आवृत्त पाठ दुर्गासन्त-शतीक भऽ गेल होयत आ प्रत्येक आवृत्तिमे एहि मन्त्रक—'या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः' पारायण भऽ चुकल होयत ।

संस्कृतमे एक टा वचन अछि—'मुनीनामपि भ्रमो जायते' हिन्दू-समाजमे मुनिक बहुत पैघ स्थान छनि, से कहवाक प्रयोजन नहि । सम्पूर्ण हिन्दू धर्मशास्त्र एही मुनिलोकनिक चिन्तनक प्रतिकल थिक, किन्तु भ्रान्ति रूपमे प्राणि मात्रमे संस्थित ई देवी मुनियो सभक हेतु अपवाद नहि छथि तखन जीव रूपमे उत्पन्न कोनो मानव होथु अथवा महामानव, ओ भ्रान्तिसँ सर्वथा निलिप्त कोना रहि सकैत छथि । अतः वर्तमान युगक सर्वश्रेष्ठ महामानव महात्मा गांधीजी पर्यन्त एकर अपवाद नहि रहि सकलाह तँ से कोनो आश्चर्यजनक विषय नहि ।

भारत राष्ट्रकें एहि नवीन रूपमे प्रतिष्ठापित करवाबे जाहि-जाहि महापुरुषक नाम लेल जाइत छनि ताहिमे महात्मा गांधीजीक नाम सर्व-प्रथम अबैत छनि । जाहि स्वतन्त्रताक प्राप्तिक हेतु बाल गंगाधर तिलक, महामना गोखले आदि महान चिन्तक लोकनिक अतिरिक्त शतसंख्य संख्यामे बलिदानी देशभक्त लोकनि अपन जीवन ओ सर्वस्व समर्पित कयलनि तनिका सभक मानसमे स्वतन्त्रताक कोन रूपक कल्पना छल होयतनि से अनुमानेसँ जानल जा सकैत अछि, किन्तु जाहि रूपक स्वतन्त्रता हमरा-लोकनिकें प्राप्त भेल अछि, एहन स्वरूपक कल्पना ककरो नहि छल होयतनि ई निर्विवाद अछि ।

हम एहिठाम ई विचार करऽ जा रहल छी जे भ्रान्ति रूपा भगवती कोन प्रकारेँ ककरामे सन्निहित छथिन । स्वतन्त्रता जन्मसिद्ध अधिकार थिक—ई उद्घोष सवप्रथम बाल गंगाधर तिलक जी कयलनि, किन्तु एहि संग जन्मसिद्ध अधिकारक रक्षा हेतु प्रत्येक व्यक्ति कें स्वार्थक परिधिसँ ऊपर रहब परम आवश्यक थिक अन्यथा अयोग्य व्यक्ति कें जन्मसिद्ध कोनो अधिकार नहि देल जा सकैत ईहो उद्घोष संगहि कयल जयवाक चाहैत छल । यदि स्वतन्त्रता जन्मसिद्ध अधिकार थिक, एहि संगहि ईहो उद्घोष कयल गेल रहैत तँ आइ जाहि रूपमे कर्तव्यच्युत भऽ लोक जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्तिक हेतु माथ मुड़ौने अछि से नहि होइत ।

उदाहरणार्थ मानि लेल जाय जे यदि क्यो उद्घोष करय जे एकटा कऽ मोटर गाड़ी सभकें प्राप्त करवाक अधिकार छैक, किन्तु शर्त ई जे ओ व्यक्ति स्वयं मोटर चलाकऽ लऽ जा सकय । तखन मोटर प्राप्तिक आकांक्षा रखनिहार यदि एकरा जन्मसिद्ध अधिकार बुझैत तँ पहिने मोटर चलायब सीखि लैत । एखन तँ स्थिति ई अछि जे ने जकरा मोटर चलयवाक लुरिछैक प्रा ने पेट्रोल खर्च करवाक समर्थ, सेहो मोटर लेने ओकरा ठेलि कऽ अना ओहि ठाम धरि नऽ जयवाक हेतु अस्वार्थ देखल जाइत अछि ।

आब महात्मागांधी जीक प्रसंग विचार करू त देखि पड़त जे एहन महान कार्य सम्पादन त कयलनि, भारतक आत्मा पर्यन्त कें चिन्हलनि, तँ रामराज्यक स्थापनाक स्वप्न देखलनि, किन्तु जाहि गीताक कर्म-योगसँ प्रेरणा लऽ ओ एतेक महान आदर्शक स्थापना कयलनि ताहि

आदर्शक रक्षक रूपमे एहन उत्तराधिकारी नियुक्त कऽ गेलाह जे शरीर मात्रसँ भारतीय छलाह, आत्मा अ-भारतीय छलनि जाहि कारणेँ ओ भारतक आत्मा कें नहि चीन्ह सकल-थिन आ देशकें परमुखापेक्षी बना गेलाह । जनिकर ई धारणा रहलनि जे हमरासँ बेसी देशक हितचिन्तन दोसर क्यो नहि कऽ सकैत अछि, जनिकर विश्वास रहलनि जे विश्व-शान्तिक अग्रदूतक रूपमे संसार हमरा मान्यता दैत अछि, जे विश्वशांतिक हेतु कल्पनाक लोकमे विचरण करैत रहलाह आ वास्तविक धरातलक स्पर्श नहि कऽ सकलाह । महात्मा गांधीक ई महान भ्रान्ति संसारक समक्ष भारतकें अकिंचन, अप्रतिभ आ हतबुद्धि बना कऽ राखि देलक । पण्डित जवाहरलाल नेहरूक ई आदर्शवादिता अथवा स्वाभिमान कोनो महापुरुषक हेतु भने उपयुक्त बूझल जाय, मुदा एक देशक शासन-सूत्र अपना हाथमे रखनिहार नेताक हेतु भ्रान्ति छोड़ि आन किछु नहि कहल जा सकैत अछि । संसारी संसार थिकैक, एहि ठाम यथार्थक उभा कऽ आदर्शक तयार बननिहार क्यो योगी, विद्वान, मनीषी, विद्वान, दार्शनिक आदि भऽ सकैत अछि, शासक नहि ।

उदाहरणार्थ दया, क्षमा, अहिंसा मनुष्यक सर्वोपरि गुण भऽ सकैत छैक, किन्तु न्यायाधीशक आसनपर बैसल व्यक्ति कें एकरा व्यवहारमे आनब कठिन छैक । क्यो ककरो हत्याक अपराधमे पकड़ा कऽ न्यायाधीशक सम्मुख उपस्थित कयल जाय आ न्यायाधीश दयासँ द्रवीभूत भऽ ओहि अपराधी कें क्षमा कऽ देखिन आ निगयमे लिखि देखिन जे हिंसा महापाप थिक, अहिंसा परम धर्म थिक

तँ एकरा प्राणदण्ड नहि दऽ सश्रम कारावास देल जाइक । की ई उचित होयत ? एहि प्रकारक निर्णयसँ न्यायालयक मर्यादा रक्षित रहत ? तहिना कोनो देशक शासक कें व्याव-हारिक दृष्टिकोण विनु अपनीने शासक क आसनपर बैसल रहवाक अधिकार नहि छैक ।

पण्डित नेहरू देशक हेतु जतेक यातना सहने होथि से सभ अभिनन्दनीय भऽ सकैत छनि, किन्तु भारतक आत्मा कें नहियो चिन्हैत एहि देशक शासन चलयवाक उत्तरदायित्व स्वीकार कऽ बहुत पैघ भ्रान्ति कयलनि से निस्सन्देह कहल जा सकैत छ ।

पण्डित जवाहरलाल नेहरूक उत्तराधिकारीक रूपमे स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री देशक शासनसूत्र हाथमे लेलनि । पाकिस्तान ओही समयमे आक्रमण कयने छल । जखन कि पण्डित जवाहरलाल नेहरूक शासन-कालमे पाकिस्तान आक्रमण कऽ आधा काश्मीर कें अधिकृत कऽ चुकल छल आ १९६२ मे चीन लडाख एवं नेफामे आक्रमण कऽ बीस हजार वर्गमील भूमिकर अधिकार कऽ भारतकें परा-भूत कऽ चुकल छल, किन्तु बुझैत एतेक राष्ट्र एतेक बूम आनब नहि कालक । आ स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्रीक नानमे लागल बहादुर शब्द वस्तुतः भारतीय सेनाकें बहादुर बना चुकल छल । जकर फलस्वरूप विजित भूभागक अतिरिक्त पाकि-स्तानक किछु भूभागपर १९६५ मे भारतीय सेना अधिकार कयलक । ओहि समयमे कोनो मूल्यपर देश छोड़ि आन ठाम जाय कोनो प्रकारक वातां करब नीतिक विरुद्ध बात छल । सुनल अछि जे ताशकन्द जयवाक निर्णय जखन शास्त्रीजी कयलनि तँ राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघक सरसंघ-

विज्ञान साहित्य नहि थिक, साहित्य राजनीति नहि थिक, राजनीति धर्म नहि थिक, धर्म कला नहि थिक । यदि ककरो एक दोसरमे फँटल देखबामे अबैत छनि तँ तनिका हेतु कहऽ पड़त या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै ... ।

चालक माननीय श्री माधव राव सदाशिव गोलवलकर (गुरुजी) जी प्रतिवाद कयलथिन। शास्त्रीजी जखन अपन निर्णय बरलवाक हेतु प्रस्तुत नहि भेलथिन तँ सुनल ईहो अछि जे माननीय गुरुजी ताहिपर कहलथिन जे डाक्टर स्वर्गीय श्यामाप्रसाद मुखर्जी केँ सेहो हम कश्मीर जयबासँ मना कयने छलथिन। वस्तुतः नीति विरुद्ध काज करवाक दुष्परिणाम भारत राष्ट्रकेँ भोगऽ पड़ि रहल छैक। शास्त्री जी तँ हुतात्मा भऽ गेलाह। नीतिक अनुसार—

याद नित्यमनित्येन निर्मलं

मलवाहिना।

यशः कायेन लभ्येत तन्न लब्धं
भवेत्तु किम् ॥

अर्थात् अनित्य एवं मलवाही

एहि शरीरसँ नित्य एवं निर्मल यश यदि प्राप्त होइत अछि तँ से नहि पाबि एहि शरीरसँ एहि विशिष्ट कोन वस्तु प्राप्त कयल जा सकैछ। तँ शास्त्रीजी तँ स्वयं अक्षय यश प्राप्त कयलनि, किन्तु एहि राष्ट्र कतबड़ क्षति भेलैक से क्यो देशक हितचिन्तक अनुभव कऽ सकैत अछि आ करैत अछि। एकरा ओहि भ्रान्ति रूपा भगवतीक महिमा नहि कहल जाय तँ की कहल जाय।

ई तँ भेल अतीतक बात जे स्मरण कयला उत्तर मोन तीते टा होइछ, आर कोनो फल नहि, परन्तु हमरा सभक वर्तमानो जे अछि से एहिना भ्रान्तिसँ भरल अछि। एक टा समय अयलैक जखन पण्डित नेहरूकेँ सेहो अपना भ्रान्तिक अनुभव भेलनि मुदा 'का वर्षा जब कृषी सुखानी' तावत तँ चीन अपन गोटी लाल कऽ चुकल छल आ तिब्बत अकाले कालकवलित भऽ चुकल छल। तहिना वर्तमानो जे एहि भ्रान्तिरूपा भगवतीक मायाजालसँ अन्ध भेल अन्धड़ जकाँ हुत ओ राष्ट्रकेँ विनाशक महागर्त दिस लेने चल जा रहल छथि सेहो अनुभव करतीह, मुदा तखन तँ उपाय नहि कोनो रहि जायत।

सम्प्रति भ्रान्तिरूपा भगवती कोना अपन उग्र रूपमे प्रकट भऽ रहल छथि तबेर दू-चारि टा उदाहरण मात्र दऽ देब पर्याप्त होयत।

चित पहुँचा, चोरि करवा, पैरवी कऽ अपन नेनाकेँ परीक्षा सभमे उत्तीर्ण करौनिहार अभिभावककेँ काल्हि माथा चोट देबऽ पड़बे करतनि।

अनैतिक ढंगसँ व्यापार कऽ धन एकत्र कयनिहारकेँ काल्हि प्रतिफल भोगहि पड़तनि।

एहि दलसँ कूदि ओहि दलभ ओहि दलसँ कूदि एहि दलमे आवि सरकार सभ, उनट-फेर कयनिहार जनप्रतिनिधिलोकनिकेँ काल्हि ज्ञान ज्ञाक योग होयबे करतनि।

एहि सरकारक भरोसे बैसल भारतीय जनताकेँ अपना भरोसपर जीवन-यापन करवाक हेतु उद्यत होअहि पड़तनि।

उपर्युक्त कथन सभक तात्पर्य ई अछि जे एखन जाहि भ्रान्तिक अन्धकारमे राष्ट्रकेँ सभ मिल कऽ घुमा रहल छथिन से वस्तुतः स्वयं भूमि रहल छथि। राष्ट्र रहबे करत, ओ स्वयं नहि रहताह। व्यवस्था जे रहय।

एही क्रममे हमर साहित्यिक बन्धुलोकनि नवीन मान्यताक हेतु एहि भ्रान्तिरूपा भगवतीक आराधनामे तन्मय भेल जा रहल छथि। यद्यपि हुनक कथन छनि जे व्यक्तिक दुराग्रहे यथास्थितिकेँ वनयवाक हेतु अपस्यात अछि, किन्तु हमर कथन अछि जे दस गोटे मिल कऽ आइ कहब आरम्भ करथुन जे सूर्योदय उत्तर दिशामे भेल करैत छैक आ प्रचारक आधारपर लाख गोटाक मुँहसँ कहा देखुन जे वस्तुतः सूर्य जमहर उगैत छथि से उत्तर दिशा थिकैक। यथास्थितिवादी एकरा पूब दिशा कहैत छथिन किन्तु प्रकृति जे परिवर्तनशील अछि, अनुक्षण परिवर्तित होइत रहैत अछि सेहो वसन्तक बाद ग्रीष्म आ ग्रीष्मक बाद वर्षाक क्रममे यथास्थितिक उल्लंघन करबासँ असमर्थ अछि। शुरुआपादसँ लऽ आसिन धरि रोपल धान अग्रहनेमे फटत आ पाकत। एयर कंडीशन सीमिते क्षेत्रमे रहि सकैछ, सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकेँ एयर कंडीशण्ड ई विज्ञान नहि कऽ सकैछ। विज्ञान साहित्य नहि थिक, साहित्य राजनीति नहि थिक, राजनीति धर्म नहि थिक, धर्म कला नहि थिक। सभक अपन क्षेत्र छैक। यदि ककरो एक दोसरमे फँटल देखबामे अबैत छनि तँ तनिका हेतु कहऽ पड़त—या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

छाउर

: श्री भुवनेश्वर पाथेय :

एक टा जिनगीक रेखा मेटा गेल
एक सेकेण्डमे निर्जिव भऽ गेल
आ इमसानमे डेराओन लगैत छल
कतहु कुकुर भुक्त छल
नेना सुतैत-जगत छल,
नोर सुखायल छल।

परंच मोन कनैत छल
उज्जरकपड़ामे लपटल एक टा जिनगी
रन्थोपर सुतल छल
पौषपुत्रकेँ छोड़ि कऽ
परंच कानमे पड़ल :

“किछू पूर्वक सिनेहक टुकड़ा . . .
आ छोट नाम मुन्ना . . .”
स्मरण होइत कटोड़ामे नोर भरि गेल
आ हुनकऽ लगलहुँ
जरैत चिता देखिकऽ
परंच धुआँ विलीन भऽ गेल
मात्र छाउरक राशि छल धरतीपर
एक टा जिनगीक छाउर उड़ैत छल।
("दुहवी" काकीक जिनगीक छाउर)

ककरो ओलतीमे

: श्री पद्मनारायण झा 'विरंचि' :

एखनो ककरो ओलतीमे ओड. डाइत
अछि

हमरा आँखिक
अजोह इजोरिया
एखनो ककरो कोनटा लग ठाढ़ छथि
हमर स्वप्न-साम्राट् आ
ककरो आडनमे दैत होयत
हमर इच्छा-पुत्र ठेहूनिचाँ !
एखनो ककरो 'प्रतिपदार्थ' आ
'प्रतिचेतनाक

आयतनमे
सपनाइत अछि हमर 'संवाद'क
धारावाहिकता !

एखनो ककरो 'निम-ड्रैट'क संज्ञा आ
सार्वभौमिकतामे

सुगबुगाइत अछि हमर
संधि आ सम्प्रेषण आ सामासिकता !
आधा देहसँ छेकल-बेदल
मन्दिरक सीढ़ी आ
आत्माक आधा इजोतसँ उज्जुगाइत
अछि

वेश्यालयक 'तहखाना' !
आधा 'कफन'क सीमान्तपर अकवच
छथि

संसारक समस्त साम्राज्ञी आ
आधा 'कफन'क पताकाक छाहरिमे
चिचिआइत अछि
सम्राट्क जहलखाना !...

पराजित स्वीकृति

: श्री ललितेश मिश्र :

पारखी मन हमर
दिशाहीनताक संकीर्ण मनोवृत्तिसँ
आकुल-आक्रान्त भऽ
अपस्यात भऽ रहल अछि
एहि शून्यमे।
परिस्थितिक निस्सन लातसँ पीचल
उद्विग्न मोन हमर कोनो छद्मवेशीक
ताकहेरमे अहनिश व्यस्त अछि
आ
आब अकुलाहट, असमर्थता, विरोध आ
क्रमशः उद्भूत भऽ रहल अजैय
विभोषिकाक

निर्मम प्रहार सभसँ आहत भऽ
प्रज्ञाविहीन भऽ उज्जरल जा रहल अछि
आ भरिसक चेतनाक संभव
संभावनापर

सुना रहल छैक ओकर पड़ावल
पौरुष, विश्वास आ कल्पनाक

नापल भजारल देवता
ओकरे सन व्यक्ति जकाँ हेरायल-
कतेकोक दुःखद गाथा

मुदा जानि नहि हमर विघटल मोन
कोन गंगाक स्नान कऽ पुनः चेतन भऽ
दुःखी आ उद्विग्न भऽ जाइत अछि।

बौआइत अछि अपन परिधिमे
डुबल कोनो विस्मृत वस्तुक आकांक्षामे
बौआयल कोनो गहनतम उदासीमे
पुनर्निर्माणक किंचित संभावनासँ
शून्य भऽ

थरथराइत कोनो अज्ञात

अनन्त शून्यमे...

समष्टि रूपसँ निन्दित भऽ

आत्मसमर्पणक भावनासँ भोजल

पराजित स्वीकृतिसँ

स्थिर अछि कल्पनासँ दूर

एहि शून्यमे।

एक बात नहि बिसरक चाही

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

एक बात नहि बिसरक चाही, हमहूँ अंग समाजक छी
किछु नहि छी, तँयो सभ किछु छी, ई जुनि बुझी अकाजक छी ।

कोनो अकाजक वस्तुक रचना करिते छथि भगवाने ने
नहि बुझने कहि दिए, अकाजक एहन कथनकेर माने ने
विश्वक ई वैचित्र्य, विचारक वैविध्यक ठेकाने ने
अहंभाव तजि अनकर कथनीके करइत छी काने ने
प्याज थिकहुँ तँ रह, बुझी जुनि हम तँ पेनी प्याजक छी ।

थिकहुँ गृहस्थ करे छी खेती, अपन पसेना बोरें' छी
रौद प्रचण्ड, प्रबल झंझाके देह लगा झिकझोरें' छी
राति-राति भरि जागि बाधवन उपजल अन्न अगोरें' छी
सीस-सीस संचित करबा ले' समचा सकल सडोरें' छी
थीक समाज जहाजे तँ हम पंखी ओहि जहाजक छी ।

थिकहुँ श्रमिक, धरतीक गर्भसँ ठोस तरल सभ कोड़ें' छी
चमक-दमक अछि जाहि महलमे तकर पजेबा जोड़ें' छी
चढ़ि पहाड़हुक छातीपर हम तकरो आत ममोड़ें' छी
परती भेल एहि धरतीके लऽ कोदारि हम तोड़ें' छी
सेवे टाके धर्म बुझें' छी सेवक गरिबनेवाजक छी ।

थिकहुँ प्रशासक राज-काजकेर करइत छी हम संचालन
अछि उत्तरदायित्व भंग हो नहि समाजमे अनुशासन
थीक प्रशासन यन्त्र, तकर हम छी आवश्यक पुर्जा सन
अछि हमरो कर्तव्य-करी सभ विधिये नियमक परिपालन
आन-आन थिक आन अंग आ मेरु-दण्ड हम राजक छी ।

व्यापारी छी, राष्ट्रोद्योगक भार माथपर गछने छी
अनुखन अर्थक चिन्तनमे हम बुद्धि समुद्र उपछने छी
अवसरपर गबदी लधने कतबहिमे कछनी कछने छी
अनकर बात कह की, अपने अपन कोड़ धरि चेंछने छी
तदपि देश पछुआयल हो नहि भागी तखन स्वराजक छी ।

छात्र थिकहुँ, अपना चरित्र निर्माणमे लागक चाही
प्रहरी छी, राष्ट्रक रक्षामे राति दिवस जागक चाही
सैनिक छी, नहि समर-भूमिसँ पीठ देखा भागक चाही
नेता छी, तँ सभसँ पहिने स्वार्थभाव त्यागक चाही

संयोजक बनि रह, अमहुँ नहि सोचू देश-विभाजक छी ।
किछु नहि छी, तँयो सभ किछु छी, ई जुनि बुझी अकाजक छी ॥



एक नचारी

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

देखू दिल्लीक रंग ।
आखिरमे आवि भेल लोक सभा भंग ॥

सत्तरि सुधंग सोझ कयलक प्रसंग ।
अबितहि एकहत्तरि उघाड़ि देलक अंग ॥

प्रतिपक्षी चुटकीमे भेला चितंग ।
रमकैत पछवामे बहि गेल उतरंग ॥

करितो समर्थ करैत छलनि तंग ।
घोषणा सुनैत मात्र भेल सेहो दंग ॥

बिड़रोमे गप्प उड़्य रंग ओ बिरंग ।
बाम दहिन दूनू केर झड़तनि अलंग ॥

के जनैछ ककरा के करता उलंग ।
लवनी के लौता, के खयता लवंग ॥

रहि रहिकऽ सभकेँ उठै' छनि तरंग ।
भोग हेतनि नरक आ कि चढ़ता सरंग ॥

झाँउ झाँउ सूनि चित रहै' छलनि चंग ।
बेस भेलनि लड़वाकेर चढ़लनि उमंग ॥

गेँठ जोड़ होइत छलै' नारि पुरुष संग ।
धन्य ई चुनाव तकर बदलि गेलै' दंग ॥

जनता तँ जनते थिक नंग ओ धड़ंग ।
लूरि मुँहक कोन कथा चालियो अबदंग ॥

धरता क्यो माटि क्यो दफानता पलंग ।
सोचि सोचि मगन रहथि बतहू मतंग ॥



कहल गेल छैक 'वंशो द्विधा, विद्यया जन्मना च' अर्थात् वंश दू प्रकारक अछि—विद्यासँ ओ जन्मसँ । एहि ठाम जन्मनासँ पहिने विद्यया शब्दक उल्लेख किछु विशेष तात्पर्य रखैत अछि । जन्मना जे वंश चलैत छैक ताहिसँ बेसी महत्व विद्यया वंशकेँ देल गेल छैक ।

जहिना पुत्र पौत्रादिक परम्परा आगाँ बढ़ल जाइत छैक तँ लोक क्रमशः बेसी प्रतिष्ठित भेल जाइत अछि, तहिना ताहि दिन विद्वानलोकनिक शिष्यो-पशिष्य परम्परा जतेक आगाँ बढ़ल जाइत छलनि, हुनक प्रतिष्ठोमे वृद्धि भेल जाइत छलनि ।

पंजीक पोथीमे जे एतेक महामहोपाध्यायक उल्लेख भेटैत अछि से ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त उपाधि नहि थिक, अपितु जे विद्वान अध्यापन आरम्भ कयलनि से उपाध्याय कहबैत छलाह आ जनिकर विद्यार्थी अध्यापक भऽ गेलथिन से महोपाध्याय तथा उपशिष्य अध्यापक भऽ गेलथिन से महामहोपाध्याय उपाधिसँ विभूषित भऽ जाइत छलाह जेना व्यक्ति क्रमशः पिता, पितामह, प्रपितामह आदि उपाधि स्वतः प्राप्त कऽ लैत अछि । अर्थात् पंजीमे उल्लिखित महामहोपाध्याय पदवी हुनकालोकनिक समृद्ध विद्यावंशक सूचक थिक । एहन महामहोपाध्यायलोकनि बूढ़ा गुरुजी नामे सम्बोधित होइत छलाह ।

एहि ठाम एक एहने मनीषी ओ एकान्त सरस्वतीक उपासकक जीवन-चरितसँ हम परिचय कराबऽ चाहि रहल छी जनिकर शिष्य परम्परा एखनो मिथिलाक सभ विद्वानसँ अधिक विस्तृत छनि आ एहि शताब्दीक अधिकतर दिग्गज विद्वान हिनक शिष्य छलथिन ओ एखनो छथिन ।

यदि कहल जाय जे मिथिलेश कामेश्वर सिंहक निधनक बाद जेना मिथिलेशक पद तथा महामहोपाध्याय डाक्टर उमेश मिश्रक देहावसानक बाद महामहोपाध्यायक पद मिथिलासँ समाप्त भऽ गेल तहिना पण्डित मुक्तिनाथ मिश्रजीक अवसान भेलासँ बूढ़ा गुरुजीक पदक अन्त भऽ गेल । ई परम्परा बहुत दिनसँ आवि रहल छल, किन्तु क्रमशः जहिना-जहिना संस्कृतक ह्रास होइत गेल तहिना-तहिना एह परम्पराक ह्रास होइत गेल ।

बूढ़ा गुरुजीक वंश परिचय—

हरिअमय मूलक रखवारी शाखामे स्वर्गीय गिरिधारी मिश्रक ई बालक छलाह । गिरिधारी मिश्रकेँ तीन विवाह छलनि—एक नरही, दोसर खोजपुर ओ तेसर मढ़िया । किन्तु कोनो पत्नीसँ कोनो सन्तान नहि छलनि । तखन वैद्यनाथक आराधना कयला उत्तर जे पुत्ररत्न प्राप्त भेलथिन तँ हिनक नाम रखलथिन—मुक्तिनाथ । हिनक जन्म पूस शुक्ल द्वादशी सन् १२७८ साल, १८७१ ई० मे भेलनि । गिरिधारी मिश्र अपन मातृक ब्रह्मोत्तरामे बसि गेल छलाह, निवासी छलाह ई डीहटोल हरिपुरक । बूढ़ा गुरुजीक जन्म ब्रह्मोत्तरामे भेल छलनि, किन्तु मात्र छौ वर्षक छलाह तँ हिनक माताक देहान्त भऽ गेलनि । तकर बाद ई खोजपुरमे सतमाय छलथिन, हुनके लग पालित-पोषित होबऽ लगलाह । हिनकर मातृक रहनि नरही । खोजपुरमे किछु छेंटर भेलापर हिनका विद्यारम्भ कराओल गेलनि आ पण्डित बच्चू ठाकुरसँ अष्टाध्यायी पढ़ब आरम्भ कयलनि । हिनकर संस्कार देखि लोकमे चर्चा होबऽ लगलनि । हिनक माम पण्डित यदुवंशी मिश्र विद्याव्यसनी छलथिन । अतः अपना भागिनक नीक संस्कार देखि हिनका नरही लऽ अनलथिन । ओही ठाम रहि नित्य सौराठ जाय, जे नरहीसँ डेढ़-दू कोस पड़ैत छैक, महामहोपाध्याय पण्डित राजनाथ मिश्र प्रसिद्ध रजे मिश्रसँ सम्पूर्ण सिद्धान्त कौमुदी पढ़लनि । एही बीच खोजपुरमे हिनक वैमात्रेय बहिन छलथिन तनिकर विवाह महामहोपाध्याय जयदेव मिश्रक संग भेलनि । महामहोपाध्याय जयदेव मिश्र महामहोपाध्याय रजे मिश्रक शिष्य छलथिन । ओही समय रजे मिश्र बूढ़ा गुरुजी कहबैत छलाह । हुनके आग्रहपर म. म. जयदेव मिश्रजी हिनका अपना संग काशी लऽ गेलथिन । ओही ठाम रहि मनोरमा, शब्देन्दु शेखर, परिभाषेन्दुशेखर, महाभाष्य, भूषण आदि व्याकरणक

मिथिलाक अन्तिम बूढ़ा गुरुजी पण्डित मुक्तिनाथ मिश्र

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

ग्रन्थक अध्ययन कयलनि । तावत कलकत्तासँ तीर्थ परीक्षा आरम्भ भऽ चुकल छलैक । ओतहिसँ व्याकरणशास्त्रमे तीर्थ परीक्षा देलनि जाहिमे प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाह । जाहि समय ई काशीमे पढ़ैत छलाह ताही समयमे महामहोपाध्याय डाक्टर सर गंगानाथ झाजी सेहो महामहोपाध्याय जयदेव मिश्रसँ पढ़ैत छलाह । एक गुरुक शिष्य होयवाक कारणे जीवनक अन्तिम समय धरि दुनू गोटेमे स्वाभाविक स्नेह सम्बन्ध बनल रहलनि ।

बूढ़ा गुरुजी काशीमे पढ़िते छलाह तँ हिनक पिता गिरिधारी मिश्र मरणासन्न भऽ गेलथिन । गामसँ तार अयलनि तँ गाम अयलाह । पिता काशीलाभ करवाक आकांक्षा व्यक्त कयलथिन । कहलथिन—एही हेतु हम अहाँक नाम मुक्तिनाथ रखलहुँ । यद्यपि बादमे गिरिधारी मिश्रकेँ तीन पक्षमे एक-एक बालक ओ खोजपुर पक्षमे दू गोटे कन्या सेहो भेलथिन, किन्तु सभसँ अधिक आशान्वित हिनकेसँ रहैत छलथिन । ई पिताकेँ काशी लऽ जाय हुनका काशीलाभ करौलथिन । मरवाक समयमे पिता अपना बटुआसँ एक टा टाका वाहर कऽ देलथिन । पितासँ सम्पत्तिक उत्तराधिकारमे वैह एक टाका मात्र प्राप्त भेलनि । एही बीचमे सभसँ बेसी जे मानैत छलथिन से माम स्वर्गीय भऽ गेलथिन । आव क्यो तेहन लोक नहि रहि गेलथिन जे नीक बेजायक परामर्श देनिहार होइतथिन ।

अध्ययनक क्रम समाप्तप्राय छलनि ताहि समयमे गुरुवर महामहोपाध्याय जयदेव मिश्रजीक परामर्श मानि महाराज महेश ठाकुरक ज्येष्ठ भाय म. म. मेघ ठाकुरक वंशज रायपुर (मध्य प्रदेश) निवासी स्वर्गीय गम्भीरनाथ ठाकुरक कन्यासँ विवाह कऽ लेलनि । रायपुरमे बसि जयवाक हेतु प्रलोभन-स्वरूप एक टा मौजे आ एक सय बीघा जिरात देवाक आश्वासन ओ लोकनि दैत गेलथिन, किन्तु विवाह कऽ जखन देश घुरलाह तँ सोझे मातृक गेलाह । दू गोटे माम जीवित छलथिन । ओ लोकनि प्रसन्नता प्रकट करवाक स्थानपर उनटे कानऽ लगलथिन । कतबो सान्त्वना देलथिन जे मध्यप्रदेश जाय हम घर नहि बान्हब किन्तु ओ लोकनि विश्वास करवाक हेतु प्रस्तुत नहि भेलथिन । हुनकालोकनिक कथन छलनि जे मुख सुखार्थ कहि रहल छी । यदि देशमे दोसर विवाह कऽ ली तँ हमरालोकनि आश्वस्त होयब ।

एहन विषम परिस्थितिमे की कर्तव्य से परामर्श लेबाक हेतु काशी जाय चाहैत छलाह, किन्तु मामलोकनि ताहू हेतु प्रस्तुत नहि भेलथिन । अन्ततो-गत्वा बाध्य भऽ सुगौना निवासी स्वर्गीय गोनौड़ झाक कन्यासँ दोसर विवाह कऽ पड़लनि ।

सभसँ गम्भीर स्थिति तँ ई छलनि जे विवाह दू गोटे कऽ लेलनि, किन्तु घर बन्हाक कोन कथा, कोन गाममे घर बान्हि तकरो निश्चय नहि कऽ सकल छलाह । मामलोकनिक इच्छा छलनि जे नरहीमे घर बान्हथि किन्तु नरहीमे रहब हिनका पसिन्न नहि छलनि ।

एही बीच प्रायः १९०३ ई० मे म. म. बख्शी मुकुन्द झाजी अपना गामपर एक पाठशाला स्थापित कयलनि । एक नीक अध्यापकक खोजमे ओ सौराठ जाय म. म. रजे मिश्रसँ पुछलथिन । ओ बूढ़ा गुरुजीक अध्यवसाय एवं शास्त्रीय योग्यतासँ नीक जकाँ परिचित छलथिन तँ हिनके नाम कहलनि आ बूढ़ा गुरुजी ओही ठाम अध्यापन आरम्भ कयलनि । किछये दिनमे हिनक ख्याति पसरऽ लगलनि । दूर-दूरसँ छात्रलोकनि एतऽ आवि पढ़ऽ लगलाह । विद्यार्थीक संख्या तँ आशातीत भऽ गेलनि । तकर बाद खोजपुरमे घर बन्हा-लनि । ओतऽ घर बन्हाक मुख्य कारण ई भेलनि जे ओतऽ सतमाय छलथिन आ एक गोटे वैमात्रेय भाय छलथिन । दोसर कारण भेलनि जे खोजपुर जबदी प्रगणामे पड़ैत छैक आ जबदी मधुबनीक बाबू साहेबलोकनिक छलनि ।

बूढ़ा गुरुजी लग आशीर्वादी विद्या छलनि । श्रद्धावनत भऽ जे दूइयो अक्षर हिनकासँ पढ़लनि से सभ अपना परिधिमे पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करैत गेलाह ।

संयोगवश स्वर्गीय क्षेमधारी सिंहजी आ अन्यो एक-दू गोटेकेँ किछु दिन पढ़यवाक अवसर भेल छलनि तँ ओतऽ जमीन बन्दोबस्त भेटवामे सुविधा होइतनि ।

हरिपुरमे नोकरी करैत छलाह तँ एक बेर बड़ अस्वस्थ भऽ गेलाह । भयंकर ज्वर भऽ गेलनि । एक राति तौनीसँ सरोबोप सम्पूर्ण देहकेँ झाँपि सूतल छलाह तँ बुझना गेलनि जे कोनो वस्तु देहपर चढ़ि रहल अछि जे पयरसँ माथ धरि लम्बायमान भऽ गेल अछि । दुनू हाथेँ ओरियाकऽ तौनीकेँ समटि कऽ जुमा कऽ दूर कऽ फेकलनि तँ ओहि नुडिआयल तौनीसँ एक टा बेस जोआयल गहुमन साप ससरि कऽ बाहर चल गेलनि । से देखलाक बाद तँ सम्पूर्ण देह घामसँ सराबोर भऽ गेलनि । किन्तु ताही संग जे ज्वर उतरलनि से ज्वरमुक्ते भऽ गेलाह ।

१९०७ ई० मे मीमांसक शिरोमणि म. म. चित्रधर मिश्र बख्शीजीक विद्यालयक निरीक्षण करवाक हेतु अग्रलयनि । बख्शीजी मीमांसक जीक विद्यार्थी सेहो छलथिन । आकस्मिक रूपेँ ओ पहिने विद्यालयपर पहुँचलाह । देहातक विद्यालय आ एतेक अधिक छात्रक संख्या देखि चकित रहि गेलाह । विलक्षणता तँ ई जे कतेको विद्यार्थी अध्यापकोसँ विशालकाय छलाह, तँ पहिने मीमांसक जीकेँ पते ने लगलनि जे अध्यापक कोन थिकाह । परिचय करौला उत्तर हिनक कृशकाया देखि विस्मित होइत पुछलथिन—ग्रहाँ एकसरे एतेक विद्यार्थीकेँ कोना पढ़बैत छथिन ?

बूढ़ा गुरुजीसँ ई ज्ञात कऽ जे सभ टा मिलाकऽ अस्सी गोटा पाठ देखऽ पड़ैत अछि । तँ तीन बजे भोरसँ पाँच बजे धरि, ८ बजेसँ १२ बजे धरि, पुनः अपराह्णमे २ बजेसँ ५ बजे धरि आ सन्ध्यामे ७ बजेसँ १० बजे धरि अध्यापनक क्रम राखऽ पड़ैत अछि, आरो आश्चर्यचकित भऽ गेलाह । ओही क्रममे ओ बजलाह जे एतनी टा मुकुन्द केहन विलक्षण रूपेँ विद्यालय चला रहल छथि आ हम महाराजकेँ कतेक दिनसँ दरभंगामे एक टा विद्यालय स्थापित करवाक हेतु मना रहल छलहुँ से सोझे नहि होइत छलाह । आब सुदृश्यलाह अछि । आषाढ़ शुक्ल द्वितीयासँ प्रायः विद्यालय आरम्भ भऽ जाय ते सम्भव ।

मीमांसक जी विद्यालयपरसँ चललाह तँ दू-चारि लगा अरियाति कऽ पुनः बूढ़ा गुरुजी पढ़बऽ लगलाह । साँझोमे सभ मीमांसक जीक अनुब्रजनमे लागल रहथि, किन्तु बूढ़ा गुरुजीकेँ अध्यापनसँ पलखतिये नहि । रातिमे सुतवाक काल बूढ़ा गुरुजीक एक छात्र पण्डित श्यामसुन्दर झा (चानपुरा) मीमांसक जीक पयर जँतैत पुछलथिन—दरभंगा विद्यालयक हेतु अध्यापक-लोकनिक नियुक्ति भऽ गेलनि ?

‘नहि, एखन आवेदने पत्र माडल गेलैक अछि ।’

मीमांसक जीक ई उत्तर सुनि श्यामसुन्दर जी पुनः पुछलथिन—हमर गुरुजी आवेदन कऽ सकैत छथिन ?

मीमांसक जी उल्लसित होइत कहलथिन—किएक नहि, एहन अध्य-वसायी विद्वान भेटथि तँ हम महाराजाधिराजकेँ व्यक्तिगत रूपेँ कहबनि । एतवा कहैत पुनः कहलथिन—ग्रहाँ अपना गुरुजीकेँ कहियोनि जे आवेदन-पत्र हगरे दऽ देताह ।

श्यामसुन्दर जी उल्लसित होइत गुरुजीकेँ आवेदन करऽ कहलथिन, मुदा बूढ़ा गुरुजी धलाइत कहलथिन—बख्शीजी हिनक विद्यार्थी थिकथिन, जँ ओतऽ नहि भेल आ एतऽ बख्शीजी सेहो बिगड़ि जाथि तखन तँ भेल । ताहिपर श्यामसुन्दर जी मीमांसक गुरुजीक संग भेल सभ गप्प कहि सुनौलथिन आ बलजोरी आवेदन पत्र लिखाय प्रातःकाल मीमांसक जीकेँ दऽ देलथिन । परन्तु चलितो काल बूढ़ा गुरुजी अपना सम्बन्धमे एको शब्द नहि कहलथिन ।

मीमांसक जीक चल गेलापर बख्शीजी बूढ़ा गुरुजीकेँ क्षुब्ध होइत कहलथिन—ग्रहाँ बड़ अलौकिक लोक छी । ग्रहाँक विद्यालयक निरीक्षण करऽ आयल छलाह आ ग्रहाँ घूरि कऽ पुछारियो नहि कयलथिन ।

बूढ़ा गुरुजीक संक्षिप्त उत्तर छलनि—‘विद्यालयक निरीक्षण तँ विद्या-लयेपर कयलनि । एहि ठाम हुनक अनुब्रजनमे लगने छात्रलोकनिक पाठमे बाधा भऽ जइतनि । बख्शीजी कोधी स्वभावक छलाह, एहि उत्तरसँ आरो

(शेख १६ पर)

टोना

: श्री छत्रानन्द :

होइत-होइत भेल वैह जकर आशा छल । एहिना सभ सरकार करैत आयल । निश्चय भेल जे रौदीक मोकाबिला सरकार डिटि कऽ करत । भूखसँ ककरो मरऽ नहि देत । टाँट पड़ल खेत-नथारक जोत-कोड़ तथा पटौनोक लेल सरकार पानिक प्रबन्ध करत । बीया-बालिक व्यवस्था-क लेल कृषककेँ आर्थिक सहायता सेहो देल जायत । एहिसँ गरीब-दुखियाकेँ जे हाल भेल होइक, नेतालाकनिक भाषणमे ओताक संख्या धरिमे खूब वृद्धि भेल । सरकारक लोकप्रियताक लेल एहिसँ बढ़ि आन कोन प्रमाण भऽ सकैत अछि ! सरकारक बढ़ैत लोकप्रियतापर मंत्री जी मुसकयलाह ।

मंत्रीजी मुसकयलाह सरकारक सम्हरल भविष्यपर, सुरक्षित कुर्सी-पर ! जनता मुस्कयल सरकारक उदार नीतिपर, सरकारक किछु कऽ देखयवाक कटिबद्धतापर । जनता सरकारकेँ देखि आ सरकार जनताकेँ देखि मुस्काइत रहल ।

चारू कात हल्ला भऽ गेल जे नवका सरकार रौदीक मोकाबिला करवाक लेल एक टा नीक योजना बनौलक अछि । ओहि योजनाकेँ सफल भेलापर लोककेँ रौदीक मुँह देखऽ नहि पड़ैत । खेत-खेतमे पम्प गड़ि जायत । जखन चाहत तखन पम्पसँ पानि भुभुआओत । फसिलकेँ समयपर पानि भेटत । फसिल लह-लहायत । उपजा मनमाँफित होयत । कृषकक दिन घुरि औतैक ।

हँ, रौदीक मुँह नहि देखत लोक । जखन पानिक प्रयोजन होयतैक, एक टा कल चला लेत, पानि भुभुआय-तैक । टाँट माटि गिजगर भऽ जयतैक आ, तकर सोन्हगर गंध कृषकक मोनकेँ मता देतैक । बज्जर भूमि लरम भऽ जयतैक । चारू कात हरियरी पसरि जायत । गरीबी छ-मन्तर ।

जल्दीसँ जल्दी गरीबीकेँ सभ भगावऽ चाहैत अछि । सभ व्यग्र अछि । सरकारक ई योजना केहन होयतैक जे रौदीकेँ छ-मन्तर कऽ देत—सभ अपना-अपनी कऽ अटकर लगबैत अछि । साँझ-प्रातः एकरे चर्चा।

खेत-खरिहान, घर-बाहर—जतऽ देखू ततऽ यँह रामायण पसरल भेटैत ।
—की ओ परेमी, कहिया धरि उमेद ?

—बस आव भगले बुझू !
‘कैबिनेट’ मे ‘पास’ भँये गेलैक ।
देरी छैक तँ मात्र ‘बजेट’ ‘पास’ होयवाक । मार्च तँ आबिये गेलैक ।

सभ ठाम एकरे चर्चा । आ, चर्चा कऽ कृषक किछु क्षणक लेल अपन दुख-वेगर्ता सभ किछु बिसरि जाइत अछि । सुखद भविष्यक मधुर-मधुर कल्पना कतेक रमणीय होइत छैक ! अन्न-वस्त्रक अभाव नहि रहत । सभ सुखी । सभ सम्पन्न । दुनियाँ प्रसन्न !

ओहि दिन गाममे एक टा मोटर-गाड़ी कि आयल, गप्पीक लेल गप्पक भण्डार लऽ आयल । ओना मोटर गाड़ी खाली गप्पियेक लेल गप्पक विषय-वस्तु छल से बात नहि । पढ़ल-बिनु पढ़ल, धनीक-गरीब—सभ एहि घटनापर समाम रूपसँ विचार करय । अटकर लगाव । तखन हँ, बुद्धि आ प्रतिभाक अनुसारें अटकरबाजीमे किछु भिन्नता अवश्य छल ।

—ओ गाड़ी ? धुरं मर्दे, सँ गेल गया आ हिनकर गाड़ीये छुटि गेलनि ! आब रौदीक मुँह नहि देखऽ पड़तहु । सरकार कहैत छैक जे रौदीकेँ ओ भगाइये कऽ दम लेत । भिठवापर एक टा आफिस खुजतैक । ओहि आफिस मे बड़का-बड़का हाकिम हुकाम सभ रहताह । बोरिंग, कल, पाइप आ मारते कल-पुर्जा सभ रहतैक । हे भगवान ! दिन घुरौलहुँ हमरा सभक !

मूड़ी कनेक उपर उठाकऽ भगवानक गोहारि कयने छल तपेसर—गामक एक टा गृहस्थ ।

—भिठवापर ? घर कतअँ औतैक ?

गामक बिनु पढ़ल-लिखल गृहस्थ सोने लालकेँ ओतेक ज्ञान कहाँ जे विज्ञानक करामातकेँ झटसँ बुझि जाथि । हट्टे विश्वास नहि होइत छनि । सोनेलालक अज्ञानतापर आश्चर्य होइत छैक तपेसरकेँ ।

‘हैं भैया....हैं भैया....
खूब खुशी छी । अहाँक पत्र कालिहु
भेटल....सिस्टर हमर भैयाके
ठीक भऽ जयतिन ने !’

‘हैं बहिन । अहाँक तपसैं जरूर
ठीक भऽ जएताह....चारि दिनसैं
अहाँक नाम लैत छथि.....’
‘मीना, सुभाषके की समाचार
छनि ? अहाँके सुख दैत छथि ने ?
मीना आव अहाँक ओ हँसैत चेहरा
कहियो नहि देखि सकब ।’ रुद्ध कण्ठसैं
मनोज बाजि उठल ।

‘एना नहि बाजु भैया, । अहाँक
रोशनी बयो नहि छीनि सकैत अछि
.....’ कहि सरिता मीनाक नव
नाम धारण कऽ मनोजक सेवामे लीन
भऽ गेलीह । मनोजक संग वेशी काल
धरि बात नहि होअय । ई इच्छा
सरिताके रहनि । एहि द्वारे जँ कोनो
बात करऽ हेतु ओ मुँह खोलथि तँ
सरिता बाजि उठथि ‘देखू, सिस्टर
अहाँके आराम करऽ लेल कहलक
अछि । बेसी बाजऽ लेल मना कऽ
देलक अछि । अहाँ बढियौ भऽ जायब
तँ खूब मन भरि बात करब ।

‘मीना, हमरा आव कोनो वाते
नहि करबाक अछि....अहाँ सुखी
छी, एतवे सुनि कऽ शान्ति भेटि गेल ।
आब जीवन जेना मृत्यु सेहो पवित्र
भऽ जायत.....’

‘अहाँ सन वीर बहादुर भायक
बहिन बनबाक हमरा जीवन भरि
गर्व अनुभव होयत ।’ कहि सरिता
अपन बातके आगू बढौलनि, ‘हम
एकटा सखीक घर जा रहलि छी,
साँझ धरि फेर आपस भऽ जायउ...’

‘बेस, जाउ.....आ देखू
रातिमे एहिठाम अहाँक जरूरी नहि
अछि । सिस्टर बड़ दयालु अछि....
अहाँके भरि राति जगबाक नहि
अछि । बीमार पड़ि जायब तँ.....’

‘हमरा किछु नहि होयत’.....
कहि सरिता चल गेलीह ।

सरिता अपन बाबूजीक पलंग
लग अयलीह । अपन मायसैं सभटा
बात कयलनि । माय सरिताक बात
सुनि अपनाके धन्या बुझऽ लगलीह
..... । एक दिस आनन्दक समा-
चार छल तँ दोसर दिस पतिक चिन्ता
दुःखक प्रेरक छल.....एक-एक
पल बीतल जाय आ आशाक डोरी
जेना पंघ भेल जाय....डा०
मिश्रके ‘भिजिट’ पर अबैत देखि
माय-बेटी ठाढ़ भऽ गेलीह ।

डा० मिश्र नाड़ी पकड़लनि आ
गम्भीर भऽ बजलाह—‘आब बेसी
आशा नहि....माय-बेटीपर जेना
पहाड़ खसि पड़लनि । एक दोसरके
कंठ लगाकऽ नोर बहाबऽ लगलीह ।

सिस्टर पाछूसैं आबि सरिताके
कान्हपर हाथ रखैत बजलीह—
‘अहाँ सन बुझनुक के ई.....’
‘बहिन, बाबूजी हमरा सभके
छोड़ि देताह !’ नोर भरल नयनसैं
सरिता पूछलथिन ।

‘विधिक गतिके जानि सकैत
अछि ?’

‘ई प्रेम भरल नयन फेर नहि
देखि सकबनि ।’ बाबूजीके देखैत
बजलीह ।

‘भेटत.....’ कहि एहन भावसैं
देखलनि जेना सरिता सभ किछु बुझि
गेलीह ।

सरिता तुरन्त स्वस्थता प्राप्त
कऽ मायसैं पुछलनि—‘माय, बाबूजीक
आंखिक दान जँ कऽ देल जाय तँ...’

‘फूसि नहि, अहाँक बाबूजी
जीवन पर्यन्त परमार्थक कार्य कयलनि
.....ज दानसैं हुनका स्वर्ग प्राप्त
हो तँ किएक नहि ।

मायसैं सम्मति लऽ डाक्टरक
लग सरिता गेलीह आ बाबूजीक
आंखिक दानक इच्छा प्रकट कयलनि ।

डा० मिश्र सरिताके धन्यवाद
दैत बजलाह—‘एहि ‘वाई’मे एक
दर्दिक आंखिक तेजी क्षीण भऽ गेलनि
अछि.....जँ हुनका अहाँक बाबूजी-
वला आंखि लगा देल जाय तँ फेरसैं
तेज आपस भऽ जयतैक ।.....’

‘अहाँ ओहि मनोज दऽ कहि
रहल छी ने.....’ कहि सरिता
मनोज लग दौड़लि गेलीह.....

‘की कहैत छी बहिन.....?’

एहि वार्डक एकटा काका अपन
आंखि देबाक सम्मति देलनि अछि,
अहाँ लेल ।

‘की बजैत छी बहिन ?’

‘हैं.....हम तुरन्ते आबि रहल
छी.....’ कहि सरिता माय लग
चलि गेलीह । सरिता स्तब्ध भऽ
गेलीह । मायके आंखिमे कनेको
नोर नहि । सिस्टर, सरिताक कान्ह
पर हाथ रखैत बजलीह—‘अहाँक
बाबूजी तँ बड़ पुण्यक कार्य कयलनि
अछि । एहि लेल कानक नहि चाही..’

आ ओहि नाड़ीके धक-धकी
बन्द भऽ गेल तखनो दुनूके हृदयमे
अकथ्य वेदना रहितो आनन्दक एक
लहरि छल..... ।

बाबूजीक वात्सल्यक बदला
सरिताके एक भाय भेटलनि । जीवन
भरि पुत्रक पियास राखऽवाली माके
पुत्र भेटलनि । आ अपन मीना बहिनके
बदला मनोजके नव जीवन, नव
बहिन आ नव माय भेटलनि । दुःखक
लहरि कतेक वर्ष बाद एक सुखक
लहरि बनि गेल । मुदा मीनाक प्रेम

भरल स्मृतिके मनोज बिसरि नहि
सकलाह । कखनो नुका कऽ कानथि,
तखन सरिताक शब्द—‘भैया, की
हम अहाँक बहिन नहि छी ?’ हुनक
नोर के पोछथि आ समयपर आशाक
दीप जरैत राखऽवाली सरिताक
आकृति आंखिक सामने खेलाइत देखि
आनन्दक अनुभव करथि ।

मिथिलाक

१२क शेषांश

क्षुब्ध होइत किछु कटु शब्द कहि देलथिन । किन्तु बूढ़ा गुरुजी तँ सहनशीलताक
प्रतिभूतिये छलाह ।

आषाढी अमावस्याक अपराह्णमे दरभंगासैं एक घोड़सवार एक लिफाफ लऽ
बूढ़ा गुरुजीक ओतऽ पहुँचल । गुरुजी गाम चल गेल छलाह । दोसरके
चिट्ठी देब स्वीकारे ने करैत छलनि । कहनि जे जरूरी पत्र छैक । श्याम-
सुन्दर जी आशवासन देलथिन जे आइये हम सभ पहुँचा देबनि । ४ बजे
समयमे चारि गोटा छात्र लिफाफ लऽ खोजपुर चललाह । खोजपुर आठ
कोससैं बेसी । चलैत-चलैत १० बजे रातिमे हिनकालोकनि पहुँचलाह ।
पत्र फाड़ि पढ़ल गेल, ओ नियुक्ति पत्र छलनि । काल्हिये दरभंगा चलबाक
चाही । भिनसरसैं मूसलधार वर्षा आरम्भ भेलैक से छुटबाक बाट नहि ।
रेलगाड़ी सकरीये धरि छलैक । खोजपुरसैं चौदह-पन्द्रह कोस । अन्तमे
अपराह्णमे ओही वर्षामे सभ चललाह । सकरी अबैत-अबैत गाड़ी छटि
गेलनि । फलतः आषाढ़ शुक्ल द्वितीयाक दिन एगारह बजेक बदला १ बजे
दरभंगा पहुँचलाह ।



महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह पहिने महामहोपाध्याय रजे मिश्रसैं आ
बादमे महामहोपाध्याय जयदेव मिश्रसैं प्राचार्यक पद ग्रहण करबाक आग्रह
कयने छलथिन, किन्तु ई लोकनि काशी छोड़ब स्वीकार नहि कयलथिन; ते
क्षुब्ध मने उद्घाटन विधि सम्पन्न कऽ चल गेल छलाह । महामहोपाध्याय
वैयाकरण केसरी पण्डित परमेश्वर झा प्राचार्य पदक प्रभारी छलाह । हुनकर
भेंट कयलथिन तँ ओ पुनः महाराजके पूछि लेब आवश्यक बुझलथिन ।
ओतऽसैं हतोत्साह होइत मीमांसक जीक भेंट करऽ गेलथिन । ओ हिनकासैं
ततेक प्रभावित छलथिन जे तुरन्त संग जाय विद्यालयक उपस्थिति पुस्तिकापर
हस्ताक्षर कराय संग आयल दुनू छात्रके पढ़ा देबऽ कहलथिन ।

तहियासैं १९२८ ई० धरि व्याकरणक द्वितीय अध्यापकक स्थानपर
आ तकरा बादसैं १९४४ ई० क नवम्बर मास धरि प्राचार्यक पदपर रहि-
अनुक्षण विद्यादानमे संलग्न रहलाह । ई ख्याति अर्जनक हेतु कहियो प्रवृत्त

दास दासी एतेकधरि जे पत्नियोंकेँ बेचि लैत छलाह । मद्य, वैश्या आ जूआ सेवनक सेहो जोरगर चलनि छल । एक समयक धनी प्रणयिकेँ निर्धन भेलापर कोनो कोनो निष्ठ वैश्या हुनक धन जन आ प्रभावसँ सहायता करैत छल । वणिक्-लोकनि हास-विलास, नृत्य-संगीत, भोजन-पान, आ विहार-क्रीडाक बीच अपन यात्राक थकान मेटवैत छलाह । दास प्रथा घनहन रूपेँ प्रचलित छल । राजा, सामन्त आ वणिक् सभ ठाम दास 'परम आवश्यक' छल । दास-दासीक क्रय-विक्रय प्रायः सभ ठाम होइत छल किन्तु काशीमे एकर केन्द्रीय बजार छल । भागल, पड़ायल, कलकता, त्यक्ता आ पराजिता युवती अधिक संख्यामे कीनल आ बेचल जाइत छल । कोनो कोनो अपरूप सुन्दरीक मूल्य कतोक लक्ष स्वर्ण मुद्राधरि चल जाइत छल । कोनो कोनो दास दासी अपन रूप, गुण आ कौशलक बले अत्यधिक महत्त्व भऽ उठैत छल ।

बनिजारलोकनि एही वणिक् समाजक एकटा सशक्त अंग छलाह । ई लोकनि लाख लाख लादल बड़दक 'कारवाँ' लऽ कऽ चलैत छलाह आ वन, पर्वत ओ मरुकान्तारकेँ साहसिकतापूर्वक पार करैत बड़ी बड़ी दूरधरि स्थल व्यापार करैत छलाह । एक एक चक्करमे बारह-बारह बरिस लागि जाइत छलनि आ चारि चक्करमे जुआनी समाप्त । एहि प्रवास कालमे घरमे तिरिया-राज रहैत छलैक । ओहि घरक सुरक्षा ओ समृद्धि, नारीक निपुणता, दक्षता ओ क्षमतापर निर्भर करैत छलैक । आत्मनिर्भरता ओ आत्म-विश्वास वाली बनिजारिन सभ अधिक, साहसी, सशक्त ओ चिन्तनशील होइत छलीह । नृत्य, गीत, वीणा-वादन, रत्न ज्ञान, आसवप्रियता आ प्रबन्ध क्षमता हिनकालोकनिक सहज गुण होइत छल । देश-विदेशक सुन्दरी नारीक सन्तान होइक दुआरेँ बनिजारा 'नस्ल' बड़ विकसित भऽ गेल छलैक । आ बनिजारिन अत्यन्त रूपवती होइत छलीह । कोनो कोनो बनिजारिन पुरुष पात्रक अभावमे अथवा पतिक अयोग्यताक कारणेँ स्वयं अपन 'कारवाँ'क संचालन करैत व्यापारिक यात्रा करैत छलीह आ विभिन्न राजपुरुष, मंत्री, योद्धा, बोद्धा आ साधु संन्यासीक सम्पर्कमे अगलासँ महानिपुण भऽ कऽ अन्तरराष्ट्रिय व्यक्तित्व बनि जाइत छलीह । एहिना आदर-मान सभठाम सुरक्षित रहैत छल । युद्ध-शान्ति ओ सन्धि-विग्रहमे एहन ललनाक विशेष हाथ रहैत छल ।

से बौद्ध-साहित्य ओ जैन साहित्य, वणिक्, श्रेष्ठी, सार्थवाह, बनिजारा आ वाणीक राजा सबहिक, केन-दोन, कथा, गाथा, यात्रा, अभियान, रोमांस, दानशीलता, धर्मप्रियता आ साहसिकताक अख्यायिकासँ भरल अछि ।

"नैका-बनिजारा" मिथिलाक सांस्कृतिक ऐश्वर्यसँ भरल-पुरल पृष्ठभूमिक बनिजारा समाजक एकटा एहन सामाजिक लोक महाकाव्य अछि जकर रूमानियत अभियान आ मानवीय

बंगीय बन्धुसँ

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

हे बंग निवासी बन्धु ! अहाँ छी हमर अंग,
अछि हमर मनक उत्ताप अहिक सन्ताप संग ।
हे वीरताक प्रतिमूर्ति ! अहाँ सभ थिकहुँ धन्य,
इतिहासक पन्नापर अछि नहि वृष्टान्त अन्य ।

ई नग्न क्रूरता आइ अहिक घर नाचि रहल,
अछि केहन मनोबल सुदृढ़ सँह टा जाँचि रहल ।
अत्याचारी घुघुआइछ, किन्तु मिझाइत अछि,
चुट्टीकेँ मरवा कालक पाँखि बुझाइत अछि ।

लपलपा रहल अछि चारु दिशि क्रान्तिक ज्वाला,
रणचण्डीकेँ पहिराउ अहाँ मुण्डक माला ।
शत्रुक संहारक हेतु अहाँ रण-सज्जित छी,
हम लय सहानुभूतिक स्वर छच्छे, लज्जित छी ।

अछि उमड़ि रहल आगाँ पाछाँ उत्साह सिन्धु,
स्वीकार करू नैतिक बल हे बंगीय बन्धु !
विश्वास भरल बड़ि रहल अहिक प्रत्येक चरण,
विजयश्री करती आगाँ बड़ि कऽ स्वयं वरण ।

संवेदनाक सौरभ कस्तूरीक सुगन्धि जकाँ चिर-स्थायी छैक । बनिजारा शब्दक सहज अर्थ भेल बनिज-व्यापार करऽवाला । सहस्र वर्षसँ अधिक पुरान होइतो ई महाकाव्य वणिक् समाजक आ सांस्कृतिक एकटा तेहन भव्य छटा उपस्थित करैत अछि जे मूल्यवान मणि जकाँ एखनो ओहिना द्युतिमान छैक । एहिमे कोनो अलौकिक चमत्कार अथवा परी कथावला चतकार नहि छैक । पारिवारिक परिसर आ बनिजारा-यात्राक एकटा मनोहर अँटावेसमे—ईर्ष्या, द्वन्द्व आ चारित्रिक दृढताकेँ समेटैत ई गाथा तत्कालीन मिथिलाक भौगोलिक ऐतिहासिक, व्यापारिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक स्थितिक एकटा अमिट दस्तावेज अछि ।

एकर संक्षिप्त कथा एना छैक—

चम्पाक प्रख्यात वणिक् राजाक एक मात्र सन्तान छलीह फुलेश्वरी । बड़ छोट अवस्थामे हुनक विवाह भेल छलनि देवपुरक पद्मपति वणिक् महाचन्द्रक पुत्र नागरचन्द्रसँ । महाचन्द्र व्यापारिक यात्राक क्रममे नागमणि-दस्युक हाथेँ मारल गेलाह । हुनक पुत्र नागरचन्द्र नवका (नैका) बनिजारा भेलाह आ सभटा उत्तरदायित्वकेँ दक्षतापूर्वक सम्हारैत विपुल धनराशि अर्जन कऽ अपना घर अगलाह आ अपन द्विरागमनक हेतु दिन पठौलनि । हुनक ससुर राजा लोमपाद किछु परम्परोचित टालमटोल कयलथिन ।

अर्जनमे अधिक दक्ष भऽ जयबाक कारणेँ नैकाकेँ द्विरागमनक विलम्ब क्रुद्ध कऽ देलकनि । ओ अपन लाख बड़दकेँ लदवा कऽ बारह वर्ष

व्यापारिक यात्रापर चलि पड़बाक घोषणा कयलनि ।

नैकाकेँ दीर्घ यात्रापर जयबाक सूचनासँ विचलित भऽ कऽ राजा लोमपाद द्विरागमनक स्वीकृति पत्र पठा देलनि । बड़ घड़फड़ीमे नैकाक द्विरागमनक भेल । अतुल सम्पत्तिक संग नैकाकेँ जे विशिष्ट वस्तु भेटलनि ओ छल महादेवक वसहा सन दिव्य बाछा तिलंगा । ई सवारीक वृषभ छलैक आ एकर वेग ओ बल अद्भुत छलैक ।

नैकाकेँ दूटा बहिन छलनि ताहिमेसँ जेठि जलेश्वरी, द्रोणनगरक द्रोणेश्वर-श्रेष्ठीसँ विद्या-हलि छलीह आ धर्मप्राण नारी छलीह । नैकासँ छोट छलथिन तिलेस्सरी जे कदमपूरक वणिक् श्रेष्ठ नन्दनस विद्याहलि छलीह । ई महाभिमानी क्रूर आ दुष्टात्मा छलीह । आ पतिक तिरस्कारकऽ नैहरेमे रहैत छलीह ।

जाहि राति नैका दुरागमनसँ घुरलाह ओकरा पराते हुनका अपन यात्रापर जयबाक दिन होइत छलनि । एतवे समयमे नैका अपना पत्नीक रूपगुणपर अर्पित भऽ चुकल छलाह । किन्तु एक लाख लादल बड़दक लाद उतारिकऽ यात्रा स्थगित करब दिवालिपानीक सूचक होइतैक आ व्यापारिक प्रतीक्षा लक्ष्य घातक होइतैक । आन आन प्रतिद्वन्द्वी बनिजारा सभकेँ हिनका बिलम्बमे पाबि हिनके पथपर आगू बड़ि जयबाक अवसर से फराके भेटि जइतैक । यँह सभ गुनि धुनिकऽ अछताति पछताति आ वियोग आकुल-व्याकुल भेल, नैका अपन पत्नी

(शेष २४ पर)

हमरा आँखिमे नाचऽ लगैत अछि वैह पन्द्रह वर्ष पहिलुका रेशमाक लाल गाल आ बुझना जाइत अछि जेना निसाफक नोनगर पानिसँ ओकर गालक लाली आब धोखरि गेल हो ।

‘बाबूजी ! दोसर बेर कलकत्ता जाइ तँ रेशमासँ कहब हियाँ आवे लेख । ओकरासँ कहब तोहर बूढ़ बाप सोरा बजबैत हो । . . . ओकरा से कहब, निसाफसँ डरक नै चाही । कोनो ओकरे संग पहिल बेर निसाफ ने भेल है । बाबूजी ! . . . ओकरा बुझा देब जे ओ ई ने सोचय जे अपन सखी-बहिनाकेँ कैसे मुँह देखाइ । ऐसन कोनो घर नै, जहाँ निसाफ ने भेल है ।’

बोदोक जँतैत हाथ हमरा छावा-पर स्थिर भऽ जाइत अछि । हमरा छावापर अपन दुनू तरहथी रोपि ओ शून्य दिस देखऽ लगैत अछि । आहम अपलक तेल चढ़ाओल शीशाक डिबियाक भकड़जोत दैत झरकल टेमीकेँ देखऽ लगैत छी ।

तालझड़ीसँ घोड़मारा भरिक सड़क उतार-चढ़ाव लैत सर्पाकार

निकलि गेलैक अछि । घोड़मारासँ डेढ़-दू मीलपर जे पहाड़ अछि, तकर नाम थिकैक “रवीन्द्र-शिखरा” । ई नाम आधुनिक थिकैक आ सरकारी कागते टामे भेटत । ओहि पहाड़पर एक टा छोट-छीन मंदिर छैक आ ताहिसँ सटले एक टा गाम । गामक नाम थिकैक कालीपाड़ा । मन्दिरक वामा भागमे एक टा नीमक गाछ छैक, जकरा डारिसँ छोट-छोट लाल पतक्का टाडल गेल छैक । दूरसँ देखने ओ पतक्का गाछक फूल जकाँ बुझना जाइत छैक । मन्दिरसँ दस डेग दूर, चारि-पाँच घरक बस्ती हिरणपुर छैक । हिरणपुरक एक छोरपर सरकारी डाक बंगला अछि आ डाक बंगलाक कातेमे नीचा ढलानपर माटिक भीत आ तारक पातसँ छाड़ल एक टा खोपरि छैक । खोपरि थिक बोदोक । बोदोक नाम थिकैक बोदो सोरेन । ओ गामक

‘परधान’ थिक आ संगहि डाक-बंगलाक चौकीदार सेहो । मेलाक दिन, यात्रीक हाथे झड़बैर, पानि, आदि वैह बेचैत अछि आ ओकरे खोपड़ी यात्रीकेँ पानि-बुझीमे शरण दैत अछि ।

डाक बंगला सड़कसँ दूर अछि आ ओतऽ बिजली आ पानिक व्यवस्था नहि रहबाक कारण हाकिम सभक आगमन ओहि डाक बंगलामे नगण्य छैक मुदा मासमे दू बेर दामीन मजिस्ट्रेट अवस्से अबैत छथि । जा धरि दामीन मजिस्ट्रेट रहैत छथि, डाक बंगला अदालत बनल रहैत अछि, चौकीदार, ओकिल आ वादी-प्रतिवादीसँ भरल । कोनो दिन काजक अधिकताक कारणेँ यदि हाकिम रातिकेँ अटक गेलाह तँ किछु काल धरि ओतऽ दीप टिमटिमाइत अछि, अन्यथा डाक बंगला भूत-बंगला जकाँ भकोभन्न लगैत अछि ।

माय पूजा करऽ कालीपाड़ा मन्दिर गेल रहथि । हमहूँ संग भऽ गेल रही । जीप-गाड़ीमे गड़बड़ी भऽ गेलाक कारण रातिमे हम सभ डाक-बंगलामे अटक गेलहुँ । किछुये कालमे बोदो हमरा सभसँ अपनैती जोड़ि लेने रहय आ अपन समांग जकाँ व्यवहार करऽ लागल रहय । बोदोक स्त्री मरि गेलि रहैक । ओकर एकमात्र बेटी रेशमा सदियन बोदोक पछोर धयने रहैक । रेशमाक वयस होयतैक सात वर्षक आ हम रही बरख एगारहेक । गोर चाम, आ लाल-लाल गालवाली रेशमाकेँ अपन गोर चाम आ बापक दुलार गौरवाहि बना देने रहय । ओ कनडेरिया आँखिये हमर ललका ऊनी कोटकेँ देखय आ मुँह घुमा लेअय ।

माय कोठरीमे वस्तुजात सरियबैत रहथि आ हम बरंडापर ठाढ़ मन्दिर दिस देखैत रही कि रेशमापर नजरि गेल । हम रेशमाकेँ अपना दिस शोर पाड़ने रहिएक, मुदा ओ मुँह बिचका कोठरीमे बाप लग चल गेलि रहय । आइधरि रेशमाक मुँह बिजकायब हमरा मने अछि ।

पिताजी वर्ष पाँचक मसानजोड़मे रहलाह । एहि अवधिमे वर्षमे दू बेर माय कालीपाड़ाक मन्दिर अवस्से जाय आ हमहूँ संग भऽ ली । बोदोसँ हमरालोकनिक सम्बन्ध बढ़ऽ लागल । रेशमाक गालक लाली सेहो दिनानुदिन बढ़ले गेलैक आ ताही अनुपातमे ओकर गौरवोमे वृद्धि भेलैक । कहियो रेशमा हमरा संग सोझ मुँह गप्पो टा कयने हो, से हमरा मोन नहि अछि ।

मसानजोड़सँ पिताजीक बदली भऽ गेलनि कलकत्ता आ हमहूँ स्कूलसँ कालेज आ कालेजसँ मेडिकल कालेजमे चक्करमे ओझरा गेलहुँ । पन्द्रह वर्षक बाद संगी सभक संग मसानजोड़ गेल रही तँ कालीपाड़ाक मन्दिर मोन पड़ि गेल आ आँखिक सोझाँ आबि गेल गौरवाहि रेशमाक लाल-लाल गाल । लाल गालवाली रेशमाकेँ एक बेर देखबाक इच्छा तेना भऽ ने बकुटि लेलक, जे हम संगी सभक संग छोड़ि विदा भऽ गेलहुँ घोरमाड़ा दिस । एहि पन्द्रह वर्षमे मन्दिर आ हिरणपुर गाममे कोनो परिवर्तन नहि देखना गेल । बुझना गेल जेना एहि पहाड़ आ वनमे आबि कऽ समय ठहरि गेल हो । डाक बंगलाक बरंडापर बैसल बोदोकेँ चिन्हबामे कनेक विलम्ब भेल आ तकर बाद अपन पूर्वक समयकेँ ठहरि जायवला धारणाकेँ बदलऽ पड़ल । समय बोदोक शरीरपर अपन मोहर लगा देने रहय । ओकर मुँह झुरीसँ भरि गेल रहैक आ कनपट्टी लगक केश उज्जर भऽ गेल रहैक । गप्प करैत ओ शून्य दिस देखऽ लागय जेना बीचेमे कोनो हेरायल वस्तु मोन पड़ि गेल होइक ।

बोदोकेँ हमरा चिन्हबामे किछु समय लगलैक आ जखन चिन्ह लेलक तँ पाँजमे भरि अपना खोपड़िमे लऽ गेल आ राति भरिक लेल रोकि लेलक । हम लाल-लाल गालवाली रेशमाक झलकी पयबाक लेल साक्रांश चारू कात देखि रहल छी, मुदा ओ जेना डुमरीक फूल भऽ गेल हो । रेशमाकेँ कतहु नहि पाबि हमर व्यग्रता बढ़ऽ लगैत अछि आ भद्रताकेँ तिलांजलि दऽ बोदोसँ पुछैत छिएक ।

सामयिक नचारी

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ :

देखू दिल्लीक ताव

अलग-बलग सुतरि गेलनि इन्दिराक दाव नहि नहि नहि कहितहिमे पहिनहि कराय देल घोषणा जे मध्यावधि होयत चुनाव धयलनि कश्मीर पार घाटे उतारि देल उबड़ुब करैत कडरेसिया केर नाव कयलनि चितंग कते’ मत्ता मतंगजकेँ असलोसँ बेसी सुतारि लेलनि फाव, ठाम ठाम कते’ डेड ठामहिपर उनटि गेल, पऽ तँ पड़ल एतऽ, ओतऽ चिरा गेल घाव देश अपन बेस भेष धयने विदेश केर भारतीयताक संग दूर कऽ लगाब, आओत समाजवाद बादमे समाज मुदा नोन तेब झकड़ी केर बखि लेत भाव जखता बेचारो की जगती जे वाम पंथ केर छैक कोन देश दिस कऽ झुकाव, भारतकेँ इण्डियाक रूप दऽ बनाड भव्य मानि खेच गेल मित्र देश केर सुझाव हीन हो चरित्र, चित्र दोस्तता निखरि उठय ओह मगर चाहि रहल खाइ हम पोलाव, बतहू यतंग भूलनाथे सहाय होथि देश केर लाजक हो तँखन बचाव

पण्डितजीक प्रशिक्षण

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र, 'अमर' :

जहिया पण्डित जीके ई ज्ञात भेलनि जे उच्च-उच्चतर माध्यमिक विद्यालयमे संस्कृत पढ़ौनिहार संस्कृत-क पण्डितलोकनिके एम. ए. क समकक्ष मानि लेलकनि अछि आ प्रशिक्षित स्नातकलोकनिक हेतु जे वेतनमान सरकार निर्धारित कयने छनि से आचार्यलोकनिके देतनि, तहिया पण्डित जीके कतेक हर्ष भेलनि तकरा अभिमान करबाक हेतु एखन धरि शब्दकोषमे शब्दक निर्माणे नहि नहि भेलैक अछि । पण्डिताइनक हर्षक अनुमान एहीसँ लगाओल जा सकैत अछि जे ओहि राति रोटीमे घिउ लगाकऽ सोझाँकऽ थारी देने रहथिन ।

विद्यालयक प्रधान मनोरंजनक हेतु एक दिन टिप्पणी सेहो कऽ देने रहथिन जे अनकर अन्न खा-खा चटाइपर बैसि-बैसि जिनगी भरि अच्च घे रतनिहार पण्डितलोकनिके तँ ई सरकार आकास ठेका देलकनि आ पण्डित जीक प्रतिक्रिया जनबाक हेतु कनडेरिये ताकियो देने रहथिन ।

पण्डित जीके ई वाक्य ठामहि लेसि देलकनि । सम्हारमे नहि रहि पौलकनि । क्षुब्ध होइत कहलथिन—होटलमे ग्रामलेट कटलेटमे ससुरक पाइके उड़ौनिहार आ टेबुल-कुर्सीपर बैसि-बैसि स्कूल ओ कालेजमे फीस दऽ दऽ पढ़निहार स्नातकलोकनिके पण्डित सभ जकाँ कोढ़ तोड़ि कऽ पढ़वाक जे अभ्यास रहितनि तँ आइ मनुक्खक बच्चाके एना गदहा नहि ने बनवितथि !

प्रधानक इशारापर पण्डित जीके कचकचवैत कहलथिन—से की पंडी जी ? पण्डित जी कुर्सीपरसँ उठैत सन

सामाजिक वर्गक मित्र रहि सकत आ ने सम्पन्न वर्ग । ओकरा अनिवार्यतः—निम्नवर्गसँ एकरूपता स्थापित करबाक हेतु अन्तिम रूपसँ बाध्य कयल जा रहलैक अछि । आजुक ग्रामीण जन जीवनमे मध्यम वर्गक जे भूमिका छैक—ओकरा कोनो विचारक किम्बा साहित्यकार अथवा कोनो राजनीतिज्ञ अस्वीकार करैत कथमपि आगाँ नहि बढ़ि सकैत छथि ।

मुद्रा बनवैत कहलथिन—स्नातक-लोकनिक ज्ञानक थाह तँ एहीसँ लगैत अछि जे शुद्ध पण्डित जी शब्दक उच्चारण मात्र नहि भऽ पबैत अछि तँ कहैत छिएक—पंडी जी । ओ ! जखन जखन स्कूल कालेजक परीक्षा-फल प्रकाशित होइत अछि तखन तखन दू चारि दिन धरि विद्यार्थी द्वारा आत्महत्याक समाचार सेहो प्रकाशित होइते अछि । परीक्षामे अनुत्तीर्ण होयबाक कारणे क्यो जहर-माहुर खा कऽ, क्यो फाँसी लगा कऽ, क्यो रेलगाडीक पहियामे मूड़ी दऽ कऽ आत्महत्या अपनेलोकनिक ज्ञानक आलोकमे करैत अछि । अनुत्तीर्णताक कारणे आत्महत्या कयनिहार संस्कृतक एको गोट विद्यार्थीक नाम उदाहरणस्वरूप उपस्थित कऽ सकैत छी क्यो गोटे ?

प्रधानाध्यापकक हेतु तँ ई घोड़ाक शह छलनि । घोड़ाक शहमे तँ ई देवाक कोनो गऽड होइते ने छैक । तँ घर छोड़ि घुसकऽ पड़लनि । गप्पके मोड़ दैत कहलथिन—पण्डित-लोकनिक जकाँ श्रम करबाक साहस एहि अडरेजियालोकनिके कतसँ श्रौतनि ? मनुष्यके मनुष्यता तँ संस्कृते सिखवैत छैक ।

किछु दिनुक बाद सरकारक दिससँ आदेश अयलैक जे ४५ वर्ष आयु तथा १५ वर्ष सेवा जाहि आचार्य फाजिल एवं स्नातकलोकनिक होइनि तनिका सभक हेतु दू मासक संघनित प्रशिक्षण पाठ्य क्रमक व्यवस्था कयल गेलनि अछि । सभके प्रशिक्षण प्राप्त करहि पड़तनि ।

आदेश पत्र अयला उत्तर प्रधान पण्डित जीके सूचित कऽ देलथिन । पहिने तँ पण्डित जी तड़िड़ उठलाह—आचार्यलोकनिके की प्रशिक्षण देल जयतनि ? आचार्यलोकनिके तँ मनोरमा, शब्देन्दुशेखर, परिभाषेन्दु शेखर, भूषण, महाभाष्य आदि आदि महान ग्रन्थ सभ के घोटि कऽ राखि देने छथि । ओहि ज्ञानके ग्रहण कयनिहारक के कह्य जे वरदराज भट्टाचार्य द्वारा अति संक्षिप्त कयल लघुसिद्धांत कौमुदी पर्यन्त सम्पूर्ण पढ़वाक पलखति आजुक वरदराज भट्टाचार्यलोकनिके छनिहँ नहि आ सरकार ताहिपरसँ

पण्डितलोकनिके प्रशिक्षित करऽ चलल अछि ।

पण्डित जीके स्तोभ लगवे ने करनि । ओ दड़रैत चल गेलाह—भेल तँ दस बीस टा शब्द रूप आ दस बीस टा धातु रूपक ज्ञान देब । छोट सन संस्कृत संग्रहमे संकलित मित्रलाभ, वीरवरोपाख्यानम् आदि पढ़वामे तँ बीआलोकनिके असुआ चाउरक भात जकाँ बकबक गराँ लगैत छनि । हिनकेलोकनिके पढ़य-बाक हेतु पण्डितलोकनिके प्रशिक्षित कयल जयतनि ? कहलकैक जे जानी ढोंढक मन्त्र नहि आ दी दराधक माथा हाथ । संस्कृतमे भरल अमूल्य निधि सभ लुप्त भेल जा रहल अछि तकर पुछारियो कयनिहार क्यो नहि आ पण्डितलोकनिके प्रशिक्षण देल जयतनि । कहलकैक जे चरऽ गेलाह तँ चोथने अयलाह ।

क्यो टोक दऽ देलकनि—पण्डित जी ! किछु होउक मुदा ट्रेनिंग फेर ट्रेनिंगे थिक ।

ट्रेनिंग ट्रेनिंगे थिकैक, मनुक्ख मनुक्खे थिक आ अहाँ अहाँ छी । आइ धरि वर्गमे जा कऽ अष्टमसँ एकादश विशिष्ट धरि पोथी नहि छबऽ पड़ल अछि । आबथु कोनो अधिकारी सुनि लेथु सभ टा । आँखि मुनि कऽ सुना देबनि । खा न खा ककरो पेरऽ चाहैत होइ से भिन्न बात, अन्यथा पण्डितलोकनिके प्रशिक्षित करवामे श्रम, समय, धन, सभ वस्तुक अपव्यय बूझबाक चाही ।

विद्यालयक प्रधान अढ़े कातसँ पण्डित जीक ई भीषण भाषण धँयँ पूर्वक सुनि लेलथिन तँ प्रकट होइत कहलथिन—पण्डित जी ! एकरे संग ईहो आदेश छैक जे प्रशिक्षणक अवसर देलाक बादो जे पण्डित प्रशिक्षित नहि भऽ जयताह तनिकर वेतन वृद्धि रोकि देल जयतनि । हमर तँ कर्तव्य थिक जे अहाँके सूचित कऽ दी । पछाति हमर दोष नहि । हमरा सभक हाथक बात नहि रहत ।

वेतनवृद्धि रोकि देल जयतनि ई कथा सुनैत देरी पण्डित जी ताहि रूपे कूदि उठलाह जेना कानमे कड़कड़ाइत कड़ू तेल क्यो ढारि देने होइनि । मानसिक संवेग बढ़ि गेलनि । वजलाह—चारु भागसँ लोक सभ तेना दाँत कड़कड़बऽ लागल जे पकला जौमे पाथर पड़ऽ चाहि रहल अछि । आब एहि बुढ़ाहीमे प्रशिक्षण की देत, घिचरी कटाओत !

पण्डित जीके पाँच वर्ष मात्र आरो सेवावधि रहि गेल छलनि । रातिमे खा पीबि कऽ ओछाओनपर पड़लाह तँ वेतन वृद्धि बन्द कऽ गेला उत्तर कतेक आर्थिक क्षति होयत तकर हिवाब जोड़ऽ लगलाह—नौ रुपैया मासिकक हिसाबसँ पहिल वर्षमे १०८) रु., दोसर वर्षमे २१६) रु. तेसर वर्षमे ३२४) रु. चारिम वर्षमे ४३२) रु. आ पाँचम वर्ष अबैत अबैत ५४०) रुपैया । सभके जोड़ला उत्तर १६२०) रु. तकर अतिरिक्त भविष्य निधिके जोड़ि दिएक तँ ११.१५ आरो अर्थात् कुल सत्रह सय एकैस टाका चारि आना । पण्डित जीके बड़ पँघ आर्थिक क्षति बुझना गेलनि ।

पहिने तँ निश्चय कयने छलाह जे किछु होयतैक, आब ट्रेनिंग फ्रेनिंगमे नहि जयवनि, मुदा हिसाब कयला उत्तर दृढ़ता क्रमहि ढील होबऽ लगलनि । ताहिपर पण्डिताइनक लल-कारा योग देलकनि । प्रातःकाल उठैत उठैत निश्चय कयलनि जे जेना-तेना काहियो काटि कऽ एहि साठि दिनुक अवधिके पार लगाओल जा सकैत अछि ।

एक भाग तँ अपना एतेक आर्थिक क्षति होयत आ दोसर दिस लोक सभ कहऽ लागत जे परीक्षामे फेल भऽ जयबाक डरै ट्रेनिंगमे नहि गेलाह । प्रथमासँ आचार्य धरिमे कोना सोड़ह वर्ष लागि गेलनि सेहो मोन पड़ऽ लगलनि । अन्तमे जी जाँति कऽ पण्डित जी प्रशिक्षण प्राप्त करबाक निश्चय परिवारके सूचित कऽ देलथिन ।

चाहलनि जे शालिग्रामके पोसिया लगा दियनि, किन्तु से क्यो गछलकनि नहि । अन्ततः कम्बल, सतरंजी, लोटा, गिलास, थारी-बाटी आ संक्षेपमे पूजाक सराइ भाजन आदि सम्हारलनि । भोजनक हेतु थोड़ेक चूड़ा, थोड़ेक सासु, अमौट, अँचार आदि सहेजलनि । तकर बाद मोनमे गुनि-धुनि होबऽ लगलनि जे ओतऽ की पढ़ाओत, की पूछत, कोना की होयत ? शेखर, मनोरमा आदि पढ़लहुँ तँ अवश्य, मुदा, कर्मक्षेत्रमे तँ कहियो ओकर प्रयोजन पड़ल नहि । यदि ओहि सभमेसँ बिटिया कऽ पुछलक त टिटिया कऽ रहि जाय पड़त । तारत म्य करैत अन्तमे सिद्धान्त कौमुदी, शब्देन्दु मनोरमा, शब्देन्दु शेखर, परि-

भाषेन्दु शेखरक विजया टीका, भूषण महाभाष्य स्मृति ग्रन्थके सूरिया कऽ मोटामे बन्हलनि । बेटाक विवाह एही साल भेल छलनि । विदाइमे 'होल्डआल' देने रहनि । बेटाक आग्रहपर ओहो बान्हि लेलनि । टाका-पँसा संगमे रहत से कतऽ राखब, तँ एक टा पेटी सेहो लेलनि । मिला-जुला कऽ एक सवा मनक मोटा भऽ गेलनि । गामसँ आध कोसपर बस-स्टैंड छलनि । आदमी एक उखड़ाहाक बोनि मडलकनि । अन्ततः अपनहि मोटा उठौलनि आ चलि पड़लाह । आधा दूर अयलापर मोनमे भेलनि जँ कदाच अवच्छेदकता प्रकारतामे किछु पूछि देलक तखन तँ सभ टा गड़बड़ा जावत । ओतसँ घुरलाह आ गामपर आबि न्यायकुसुमांजलि सेहो लऽ लेलनि ।

अस्तु, जेना-तेना शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय पहुँचलाह । बाटमे मोटा उधैत-उधैत चानि गुलगुला गेल छलनि । बेर डरैत छलैक आ नामांकन आइये करयबाक अन्तिम तिथि छलैक । नामांकनमे ठाढ़े पचीस रुपैया लऽ लेलकनि । रहबाक, खयबाक पीबाक एहिसँ बेसी असुविधा एहि भूमण्डलपर आन ठाम कतहु होयतँ कतकर कल्पनो नहि कयल जा सकैत अछि ।

दोसर दिन वर्गमे आन-आन प्रशिक्षणार्थी सभक संग बैसलाह । ओहि दिन सभकेँ अपन-अपन क्रमांक तथा पाठ्य विषयक सूचीसँ परिचय कराओल गेलनि । ताहि क्रममे शिक्षाक उद्देश्य, परिभाषा, इतिहास, दर्शन, शैक्षणिक मनोविज्ञान, शरीर-विज्ञान, शिक्षाक विभिन्न समस्या, प्रकृतिवाद, प्रयोगवाद, यथार्थवाद, प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री रूसो, जॉन डेवी, हरवर्ट स्पेंसर आदिक शिक्षा दर्शन, विद्यालय संगठन, शिक्षण विधि, डाल्टन योजना आदि आदि विषय सभक नाम सुनि कऽ तँ बूझ पण्डित जीकेँ चाँहु आबऽ लगलनि । एहि ऊहापोहमे जे एहि विषय सभक भू-स्पर्श नहि छनि, पण्डित जीकेँ अपन क्रमांको विसरि गेलनि । बूझना जाय लगलनि जे पाछूसँ क्यो तेहन कृपमे ढकेल देलक अछि जाहिमे बाँसो-सँ थाह पायब असम्भव । अकस्मात्, मुँहसँ बाहर भऽ गेलनि—हा दुर्ग ! जयति दुर्गति तारिणि !

भोजनमे निश्चय कऽ आयल छलाह जे इ मास असिद्धोपर खेपल

जा सकैत अछि । परन्तु दू-चारि दिन बितैत-बितैत फक्-फक् करऽ लगलाह । अन्तमे बूझना गेलनि जे सम्पूर्ण आचारक पालन करैत करैत अपने सुखा कऽ सुखल अँचार भऽ जायब । ओहि ठाम यदि सिद्धान्तक व्यवस्था भऽ सकैछ तँ शूद्र स्पृष्टे आ संगमे शालग्राम सेहो छलथिन । बूझि पड़ऽ लगलनि जे सत्रह सय एककसँ रुपैया पचीस नवका पाइ अतिरिक्त प्राप्त करबाक लोभमे एहन नेहो जे प्रशिक्षण समाप्त करैत करैत पुनः स्कूल जय-बाक योग्य रहि पोताह अथवा नहि ।

दिनानुदिन होइत हिनक शारीरिक ह्रासकेँ देखि आन-आन सहपाठी लोकलि आपद्मक स्मरण करौलथिन; स्मृतिक वचन सुनौलथिन । अपना इच्छासँ क्यो नहि आयल छी, अपितु राजाक आज्ञा अछि । राजाक आज्ञाक पालन करब सेहो धर्म थिक । दोसर बात ई तँ भैरवी चक्र थिकैक, प्राप्तेतु भैरवीचक्रे सर्ववर्णाः द्विजातयः । एहि ठाम तँ कर्मणासभ ब्राह्मणे छी—चतुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः अन्तमे पण्डित जी शालग्रामकेँ भोगमे चारि आना भरि मिसरी उत्सर्गि ओहि प्रसादसँ जल पीबऽ लगलाह आ छात्रावासक मेसमे पलथा मारि दुनू साँझ पराश्रं दुर्लभ लोके वचनकेँ स्मरण करैत आतापि भिक्षतो येन' हन्त्रक भरोसे सातो फाटक फोलि देल करथिन ।

तीन चारि दिन धरि तँ पढ़ाइ आरम्भ होयबाक समयधरि वर्गमे उपस्थित नहि भऽ सकलाह; किछु विलम्ब भऽ जाइनि । हाजरी हिनक नहि होइन । पाँचम वा छठम दिन संयोगसँ पहिने पहुँचिगोलाह । हाजरी होबऽ लगलैक, किन्तु हिनका अपन क्रमांक स्मरण नहि रहनि, दोसर एना हाजरी होइत छैक तकर कल्पनो नहि रहनि । सभक हाजरी भऽ गेलाक बाद ई उठिकऽ ठाढ़ भेलाह ।

कहलथिन—हमर की भेल ?

‘कतेक क्रमांक अछि ?’

‘से नहि बूझल अछि ।’

‘एतेक दिनसँ पढ़ाइ होइछै’

अहिकेँ क्रमांक नहि बूझल अछि ?

कहाँ छलहुँ एतेक दिन ?

अन्तमे नाम पुछलापर ज्ञात भेलनि जे हिनकर हाजरी कहियो नहि भेल छनि आ साठि दिनमे एको दिन बिनु अनुमति लेने जे अनुपस्थित रहताह तनिका परीक्षा

जे किछु हो । आब पण्डितजी अपनाकेँ सामान्य रूपसँ परिस्थितिक अनुकूल बना लेलनि अछि । मास दिनपर जकरासँ भेंट भेलनि अछि तकरा स्पष्ट परि-लक्षित भेलैक अछि जे मेसक भात खयलासँ शरीर चिकना गेलनि अछि; जेना द्वितीय विवाह कयने होथि ।

देवाक अधिकार रहतनि अथवा नहि से बात प्राचार्य जानथि ।

पण्डितजी बकर-बकर प्राध्यापककेँ मुँह तकैत रहलाह । किछु उत्तर देखिन से बुजकौर लागल रहनि प्राध्यापक पुछलथिन—एना किएक होइत अछि ?

पण्डितजी विह्वल होइत कहलथिन—बाबू ! जीवनमे नै कहियो एना हाजरी भेल आने ‘जी हाँ’ कहऽ पड़ल । संसारक सभ टा कानने उनटि गेल छैक । पहिने बूढ़ नेनाकेँ पढ़बैक आ आब नेना बूढ़केँ पढ़बैत छैक । अपने सभ भेलैक अछि विजलीक युगमे आ हमरा लोकनि पढ़ैत छलैक डिबियाक युगमे । विजलीक आगाँ तँ डिबियाक अस्तित्वो ने मेटा जाइत छैक । एहि छगुनतामे आत्मविस्मृति भऽ जाइत अछि । सुधिये विसरि जाइत छिरेक ।

प्राध्यापक कहलथिन—मुदा बाला दपि सुभाषितम् ग्राह्यम् ईहो तँ शास्त्रमे कहल छैक ।

हूँ से तँ मानल, मुदा ‘सुभाषित’ कहल गेल छैक, भाषितम् नहि । एहिठाम तँ छिटफूट छिटफूट बात सभकेँ एकठान जोड़िकऽ रंगविरंगक बात, कहैत जाइत छिरेक । एक गोटे कहि जाइत छी जे व्यक्ति केँ दृष्टिमे राखि शिक्षाक उद्देश्य स्थिर करबाक चाही तँ दोसर गोटे कहि जाइत छी जे समाज केँ दृष्टिमे राखि ।

ने जानि आइ पण्डितजीक सरस्वती कोना जागि गेल छलथिन अपन बजबाक क्रममे आगू बढ़बैत पुनः कहऽ लगलथिन—हमरा जनैत प्रोफेसर साहेब ! व्यक्ति आ समाजमे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध छैक, बिनु व्यक्तिये समाज भँये ने सकैत अछि आ बिनु समाजे व्यक्ति एकसर की करत ? मुदा एतबा तँ निर्विवाद जे पहिने व्यक्ति भेल आ व्यक्तिये द्वारा समाजक संघटन भेल । अतः व्यक्तिक महत्व बढ़ि जाइत छैक जे किछु हो, तत्त्वार्थ यँह बहराइत अछि जे दुनू एके भिन्न तखन पुनि एकटा भ्रमजाल पसारब आ

ताहिने बूढ़ सुगा सभकेँ बझा बझा कऽ ‘चित्रकोटके घाटपर’ रटबैत रहब एहिसँ की फल बहरायत से भगवाने जानथि ।

प्रोफेसर साहेब रहथि विनोदी लोक । पण्डितजीक प्रवचनमे रस लेबऽ लगलथिन । पुछलथिन—आरो किछु अनुभव भेल अछि ?

पण्डित जी दीर्घउच्छवास लैत कहऽ लगलथिन—“क्यो कहैत छथि शिक्षाक उद्देश्य चरित्र निर्माण होय-बाक चाही तँ क्यो कहैत समन्वित विकासार्थ, क्यो कहैत छथि आजी-विकार्थ तँ क्यो आत्मानुभूतिक हेतु । एहिना जतेक मुण्ड ततेक विचार आ ताहिमे विलक्षणता ई जे सभ टा विचार विदेशक लोक कयने अछि, अपना देशकेँ तँ कहियो एतेक योग्यते ने भेलैक जे एहन गहन तथा सूक्ष्म विषयपर विचार कऽ सकैत । शिक्षा छटल चिकसक नाक भऽ गेल, जकरा जैमहर मोन हो तेम्हर कऽ घुमा दियौक ।

मुदा प्रोफेसर साहेब ! अपना सभक ऋषि-मुनिलोकनि एना लुच लुच नहि ने करैत छलाह । हुनका-लोकनि तत्त्वदर्शी छलाह । कोनो विषयपर गम्भीर चिन्तन-मनन करैत छलाह । विचार मन्थनसँ जे सत्य आभासित होइत छलनि तकरा प्रयोगक कसौटीपर कसि लेल करैत छलाह तखन सिद्धान्त निरूपण करैत छलाह । आब तँ ऊँटक दौड़ पच्छिम मुँह । सभ टा नीक विचार पच्छिमक लोक दऽ सकैत अछि । पच्छिमक एक टा शिक्षाशास्त्री उठलाह तँ कहलथिन—नेनाकेँ जे फुरैक से करऽ दिएक । ठेस लगने अपने बुद्धि बढ़ैत जयतँक । बेस बाबू ! चानिये पर चढ़ऽ चाहय तँ चढ़ऽ दियौक, जेहन सहलोला सभ भेल जा रहल छथि से तँ प्रत्यक्षमे प्रमाणक प्रयोजने नहि । हमरा ओहि ठाम एक बेर नीतिकार कहि गेलथिन—लालयेत पंचवर्षाणि दश वर्षाणि ताडयेत् . . . ठोकल-ठठाओल सिद्धान्त, यूग-युगधरि सत्य रहज्जला हुनकालोकनि शाश्वत सत्यक उद्भा-